❖ वर्ष 49 ❖ अंक 08 ❖ अगस्त 2022

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 08 ● अगस्त 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. चित्रकथा
32. क्या आप जानते हैं?
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

कविताएं

17. भारत देश हमारा
: डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

17. हमें है प्यारा, ध्वज हमारा
: अशोक 'आनन'

23. फलों का राजा
: भानुदत्त त्रिपाठी

23. बीज प्रेम के
: सोनी निरंकारी

27. चुनचुन चिड़िया आती है
: सुमेश निषाद

27. पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ
: श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

33. आओ मिलकर देश बनायें
: अंशु शुक्ला

39. राखी बांधो, प्यारी बहना
: महेन्द्र कुमार वर्मा

39. रक्षाबन्धन
: शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

47. वतन हमारी जान है
: डॉ. ओम पंकज

47. अपनी है धरती
: राजेश निषाद

कहानियां

8. बेचारे परिन्दे
: सेवा नन्दवाल

20. संगठन जिन्दाबाद
: कल्पनाथ सिंह

24. अपनी पसन्द पहचानो
: राधेलाल 'नवचक्र'

30. अनोखी सजा
: राजेन्द्र कुमार

40. ऐसे बंधी बिल्ली के गले में घंटी
: अमर सिंह शौल

विशेष/लेख

7. दिव्य वचन

16. परिश्रम
: हरजीत निषाद

18. भारत की शान तिरंगा
: कमल जैन

26. अपने खून से रंगूगी खादी
: राजेन्द्र यादव

29. कीवी
: परशुराम शुक्ल

42. लाला लाजपतराय
: राजेन्द्र यादव 'आजाद'

43. घर की शान बेटियां
: हेमंत नागले

46. आम ...
: विभा वर्मा

अधिकारों का बन्धन

जब से हमने होश सम्भाला है, थोड़ा बड़े हुए हैं, दुनिया और समाज की बातों को समझने लगे हैं, तभी से हम अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गए हैं। जहाँ भी किसी का, कोई भी अधिकार पूरा नहीं हो रहा होता या कोई उसमें बाधा डालता है तो उसे बुरा तो लगता ही है साथ ही वह अपने आपको इस योग्य मानने लगता है कि मेरा अधिकार कोई मुझसे छीन नहीं सकता।

हमारे संविधान ने भी हम सभी को अनेकों मौलिक अधिकार दिए हुए हैं जैसे कि समानता का अधिकार, स्वतन्त्रता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतन्त्रता, संस्कृति एवं शिक्षा का अधिकार और इन सभी को पूरा करने के लिए संवैधानिक अधिकार भी दिया गया है।

इन मौलिक अधिकारों को कोई भी बाधित करे तो वह उसे पूरा करने के लिए जी जान से जुट जाता है और अपने अधिकारों की रक्षा करना अपना मौलिक कर्तव्य मानता है। जाने-अनजाने वह अपने अधिकारों को सुरक्षित करते हुए दूसरों के अधिकारों का हनन भी कर बैठता है जिसे उसे करने में कोई संकोच भी नहीं होता। उसे तो केवल अपना ही और अपने स्वार्थ को ही देखना होता है। किसी को क्षति पहुँचाकर, उसकी भावनाओं को आहत करके अपना छोटा-सा हित उसे सर्वोपरि दिखाई देना शुरू हो जाता है।

प्यारे साथियों, यह कैसी बिडम्बना है कि अपना छोटा स्वार्थ पूरा करने के लिए दूसरे को अधिक नुकसान पहुँचाना!

आज व्यक्ति अपने अधिकारों और स्वतन्त्रता को हासिल करने के लिए अपने कर्तव्यों की ओर किंचित भी ध्यान नहीं देता। कर्तव्यों को पूरा न करने के लिए वह अपनी आँखों पर पट्टी बांध लेता है जैसे कि उसे अपने कर्तव्यों की जानकारी ही नहीं है। वह छोटे-बड़े सभी का सम्मान करना भी भूल जाता है। आवश्यकता पड़ने पर दूसरों का उपयोग करता है परन्तु विपत्ति के समय में उन्हें असहाय और उपेक्षित करके दुख भी देता है।

स्वतन्त्रता को केवल अभिव्यक्ति, समानता और शिक्षा तक ही सीमित करके न बैठ जाएं। यह भी याद रखें कि जब बोलें तो किसी का दिल न तोड़ें, मधुर बोलें, कटु वचन न कहें। हम सभी के साथ जाति, धर्म से ऊपर उठकर समानता का व्यवहार करें और सबको उचित सम्मान दें। हमारी शिक्षा पुस्तकों से शिक्षा ग्रहण कर केवल रोजगार का साधन ही न बनकर रह जाए बल्कि शिक्षा से अपने आपको इस प्रकार शिक्षित करें कि मैं अपने सभी कर्तव्यों का पालन अवश्य करूँगा।

आओ साथियों, हम सब विचार करें कि क्या मेरा मेरे मन पर अधिकार है। अगर है और मन हमारा आदेश मानता है तो हमें कर्तव्यों को निभाने की बात भी नहीं करनी पड़ेगी। यह मन तो अपने आपको सभी अधिकारों का स्वामी मानता रहता है और यही उसके बन्धन का कारण है। बन्धन में रहना कोई भी पसन्द नहीं करता परन्तु जहाँ प्यार होता है वहाँ व्यक्ति स्वयं ही बंधा हुआ चला आता है, वह भी अपनी मर्जी से, यानि अपनी स्वतन्त्रता से। क्यों न हम भी प्यार से सराबोर होकर सबको प्यार दें, मन में नफरत का भाव न रखें क्योंकि जो भी आप देंगे वह लौटकर आपके पास ही आएगा। इसलिए ...

''आओ कदम बढ़ाएं, प्रेम के दीप जलाएं।''

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 257

कुल आलम दी वेखो इसने रचना खूब बणाई ए।
भुल्ले नहीं कोई इक दो बन्दे भुल्ली कुल खुदाई ए।
धरती अग पाणी ही लोकां समझे जग दे रचनहार।
वायु नूं कोई पूजण लग्गा कोई शब्द नूं कहे करतार।
इस दुनियां दी बणत बणाई छे रस तिन्न गुण ते पंज तत्त।
सभ विच रह के सभ तों न्यारा लुकया बैठा इस विच सत्त।
इस रब नूं पर ओही जाणे जिसनूं आप जणावे एह।
कहे अवतार गुरु दे बाझों भेद कोई विरला पावे एह।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इस प्रभु-परमात्मा ने यह सृष्टि बहुत ही खूबसूरत और विचित्र बनाई है। इसने सब कुछ विशाल और पल-पल बदलने वाला बनाया है जिसको देख-देखकर इन्सान हैरान होता रहता है। सृष्टि की अद्‌भुत रचना को देखकर एक दो नहीं बल्कि सारे संसार के लोग भूले हुए हैं। परमात्मा की बनाई हुई धरती की विशालता और विविधता आश्चर्यचकित करती है। कहीं पर ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं तो कहीं पर गहरी खाईयां हैं। कहीं पर रेगिस्तान हैं तो कहीं पर विशाल गहरे सागर हैं। इन्सान धरती पानी और अग्नि की शक्ति को परमात्मा मानकर इनके आगे ही नतमस्तक होता है। इस अद्‌भुत रचना को ही रचनहार परमात्मा मान लेता है। वायु की व्यापकता, इसके फैलाव और ऑक्सीजन के रूप में मानव सहित तमाम जीव-जन्तुओं को जीवन देने के कारण इन्हें ही परमात्मा मान लेता है। संसार में कोई वायु की पूजा कर रहा है तो कोई शब्द को सर्वशक्तिमान मान रहा है।

बाबा अवतार सिंह जी परमात्मा के रचना कौशल का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि परमात्मा ने सृष्टि की रचना करते हुए छः रसों का सृजन किया जो रसनेन्द्रियों द्वारा महसूस की जा सकती हैं। इन छः रसों मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय व तिक्त का अलग-अलग स्वाद है और ये सभी इन्सान की रसनेन्द्रियों और मन को अचम्भित किए हुए हैं।

परमात्मा ने पाँच तत्वों धरती, पानी, अग्नि, वायु और आकाश तथा तीन गुणों सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण का निर्माण कर सृष्टि को अद्‌भुत रूप प्रदान किया है। यह परमात्मा इन सबमें रहकर भी इन सबमें न्यारा है, निर्लेप है।

इस प्रभु का भेद केवल वही जान सकता है जिसको यह प्रभु स्वयं समझ प्रदान करे। सत्‌गुरु के अलावा अन्य कोई इसके भेद को नहीं जान सकता है। संसार में सूझवान उसी को कहा गया है जो सत्‌गुरु की शरण में आकर इस प्रभु को जान ले, मान ले और इसका होकर जीवन का आनन्द प्राप्त करे।

भावार्थ : हरजीत निषाद

अनमोल वचन

❖ मानवीय गुण और सेवा, सिमरन, सत्संग हमें हीरे की तरह तराशते हैं। सन्त हमेशा मध्यम मार्ग की बात करते हैं। वो अति से बचकर चलते हैं। घड़ी के पेंडुलम की तरह पल-पल इधर-उधर न होकर, निरंकार के आसरे अपने संतुलन को बनाए रखते हैं।

❖ जीवन में उतार-चढ़ाव और समस्याएं तो आती ही हैं। अगर हम सीमेंट के फर्श पर गिरेंगे तो चोट ज्यादा लगेगी और अगर किसी गद्दे या घास पर गिरेंगे तो चोट कम लगेगी। ऐसे ही अगर निरंकार-प्रभु का सहारा लेंगे और मानवीय गुणों का प्रयोग करेंगे तो किसी भी परिस्थिति में परेशानी और बेचैनी का एहसास नहीं होगा।

❖ कई संगीत यंत्र जिनमें तार होती है, उन्हें अगर ज्यादा कसा जाए तो भी आवाज और स्वर सही नहीं निकलते, कुछ अकड़ के आवाज आती है। अगर तार को ढीला छोड़ दें तो भी कोई स्वर नहीं सुनाई देंगे। उसे एक उचित मात्रा में कसना होता है। ऐसे ही रिश्तो को भी ध्यान से एक मर्यादित रूप मे निभाना है। **– सत्गुरु माता सुदीक्षा जी**

❖ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाए सिद्धांतों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए।

❖ आप चाहे जितने भी सही काम करो उसे कोई हमेशा याद नहीं रखेगा, पर आपकी एक भी गलती को कोई कभी नहीं भूलेगा।

❖ कोई भी विचार यदि क्रोध में करेंगे तो हाथ में पछताने के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा।

❖ अन्याय के चरण जहाँ-जहाँ पड़ते हैं वहाँ-वहाँ विद्रोह की ज्वाला फूटती है।

❖ फूल हमेशा बगीचे में सुन्दरता पाते हैं।

❖ शरीर सबसे बड़ा उपहार है, खुशी सबसे बड़ी दौलत है और विश्वास सबसे बड़ा पवित्र रिश्ता है।

❖ एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है इसलिए उसका हर हालात में सम्मान करना चाहिए।

❖ कोई भी बात कहने से पहले हमें एक बार शुद्ध मन से अवश्य सोचना चाहिए कि हम जो बात अपने मुख से निकाल रहे हैं उसका परिणाम अच्छा रहेगा या बुरा।

❖ जो इन्सान, अपनी जरूरतें (इच्छाएं) सीमित कर सादगी जैसा आचरण व सरल स्वभाव के साथ जीवन जीता है वह सदा सुखी रहता है।

❖ बीती बात के लिए शोक तथा भविष्य के लिए निरर्थक चिन्ता न करके वर्तमान के लिए प्रयत्नशील रहने वाला ही ज्ञानी है।

❖ निकृष्ट साधनों से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती, शुद्ध उद्देश्य के लिए साधन भी शुद्ध होने चाहिए।

– अज्ञात

संकलन : श्रीराम प्रजापति

दिव्य वचन

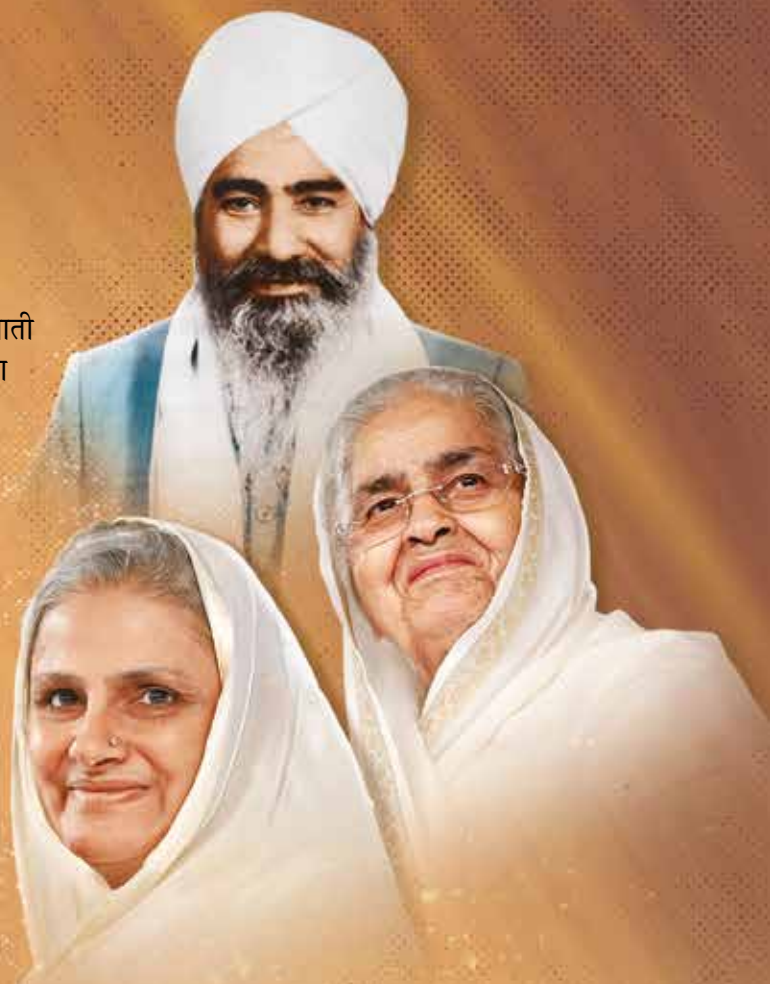

बाबा अवतार सिंह जी

★ ज्ञान प्राप्त कर लेने से मुक्ति तो प्राप्त हो जाती है परन्तु ज्ञान संगत से प्रेम करने से ही टिकता है। ज्ञानी महापुरुष सत्कारपूर्वक सन्तजनों की सेवा करते हैं, निरंकार को अंग-संग देखकर अरदास करते हैं और निरंकार उनके हर कार्य पूर्ण करता है।

★ आपने सबसे प्रेम करना है, किसी से नफरत, द्वेष, वैर-विरोध नहीं करना। आप गुरु के ज्ञान पर चलोगे तो आपके लोक-परलोक दोनों संवर जाएंगे।

★ आपके काम तो निराकार-प्रभु ने पूर्ण करने हैं, साकार ने तो केवल इशारा ही देना है। जो गुरु के वचनों को मान लेगा वह सुखी हो जायेगा।

★ तीन बातें कभी नहीं भूलना, इनका जीवन में प्रयोग करने से आपकी भक्ति में कोई भी विघ्न नहीं डाल सकता। ये तीन बातें हैं– सेवा, सुमिरण और सत्संग। इनको कभी न छोड़ो फिर आपकी भक्ति में कभी भी कमी नहीं आएगी।

निरंकारी राजमाता जी

★ जिस घर में प्यार होता है, एक-दूसरे के सम्मा की भावना होती है, वह घर स्वर्ग बन जाता है।

★ जिसके ऊपर सत्गुरु की कृपा हो जाती है, वह सदैव भक्ति में लीन रहकर सुख और आनन्द की प्राप्ति करता है।

★ हमने सदा पक्कों का ही संग करना है, कच्चों का नहीं क्योंकि जो स्वयं ही डूब जाते हैं वे दूसरों को कैसे पार उतारेंगे?

★ गुरु से प्यार पाने और उस प्यार को बनाए रखने के लिए अपना आप मिटाना पड़ता है क्योंकि रास्ता दिखाने वाले तो संसार में लाखों मिल जाते हैं परन्तु मंजिल पर पहुँचाने वाला केवल सत्गुरु होता है।

माता सविन्दर जी

★ ज्यों-ज्यों हम निरंकार के प्रति समर्पित होते हैं, त्यों-त्यों हमारे अन्दर सकारात्मक भावना आती है।

★ निराकार-प्रभु कृपा करे सभी का व्यक्तित्व दया, प्रेम, करुणा और विशालता जैसे मानवीय गुणों से युक्त हो और धरती पर बसने वाले हर इन्सान के जीवन में प्रेम, आनन्द और सुख-शान्ति आए।

★ सन्त वह होता है जो अपने अहम्-भाव को त्याग कर, अपने अहंकार और अन्य प्राथमिकताओं को पीछे छोड़कर सत्संग से जुड़ा होता है। सन्त की हमेशा यही कोशिश होती है कि मैं दूसरों को भी सत्संग के साथ जोड़ूं।

संकलनकर्ता : रीटा (दिल्ली)

कहानी : सेवा नन्दवाल

बेचारे परिन्दे

कमरे से बाहर निकलकर सजल विस्तृत लॉन में आ गया। अपने आप उसके पैर एक किनारे लगे पेड़ की तरफ बढ़ चले। पेड़ पर एक घास-फूस का घोसला बनाकर कुछ पंछियों को उसने पाल रखा था। ये मासूम पंछी उसके अच्छे दोस्त बन चुके थे जिनके साथ वह जब-जब खेलता, बातें करता। अपने बनाए हुए घोसले के पास पहुँचकर वह दंग रह गया। यह क्या... उसका प्रिय घोसला टूटी-फूटी अवस्था में धूल-धूसरित पड़ा था। उसके पालित चारों पक्षी– दो तोते और दो चिड़िया अधजली अवस्था में मृत पड़े थे। इन मासूम परिन्दों की असामयिक मृत्यु पर उसके मुँह से कराह निकल गई और वह बुक्का फाड़कर चीख उठा। जब उसकी आवाज सुनकर कोई बाहर नहीं निकला तो वह खुद तेजी से अन्दर की ओर दौड़ पड़ा।

उसे यूं चीखते-चिल्लाते अपने पास आते हुए देख रसोईघर में कार्यरत उसकी मम्मी चिन्तित हो गई– क्या बात है बेटे?

–मम्मी मेरा घोसला ...

–क्या हुआ तुम्हारे घोसले को?

–मेरा घोसला बिल्लू ने तोड़-फोड़ दिया।– सजल ने शिकायत की।

यह सुनकर मम्मी आश्चर्य में पड़ गई। बिल्लू ऐसा क्यों करेगा?

बिल्लू एक पड़ोस का लड़का था और अक्सर वह सजल के साथ खेलता रहता था।

मम्मी ने पूछा– बिल्लू यहाँ आया था क्या?

–पता नहीं।– सजल ने कहा।

–फिर कैसे उसका नाम लगा रहे हो?– मम्मी ने जानना चाहा।

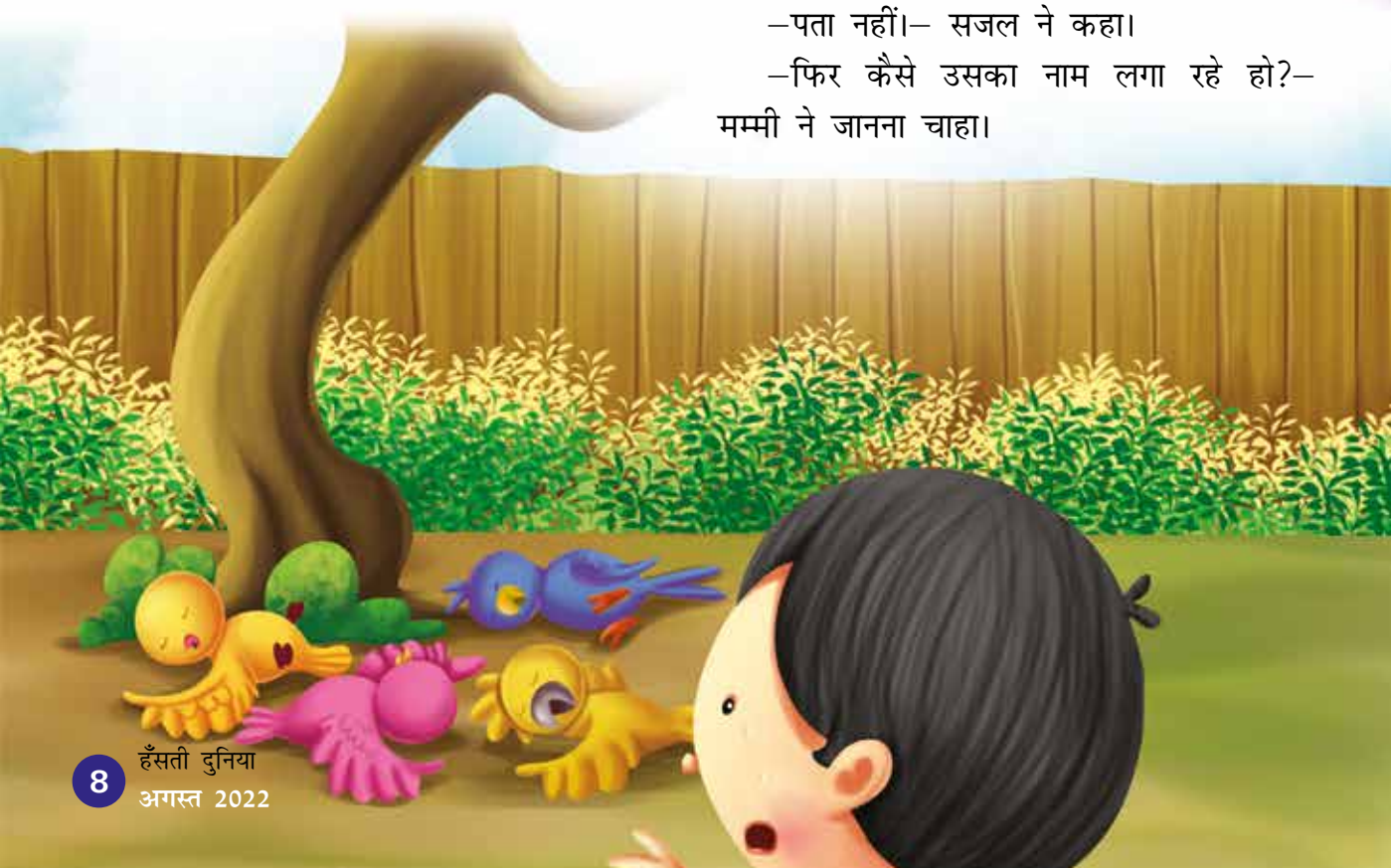

सजल ने कारण बताया– मम्मी कल जब हम स्कूल में क्रिकेट खेल रहे थे तो बिल्लू हमारे पास खेलने के लिए आया था। हमने मना कर दिया कि अभी नहीं यह मैच खत्म हो जाने दो फिर खेलना। इस पर वह चिढ़ गया और जाते समय धौंस दे गया कि ठीक है मत खिलाओ, मैं तुम्हारा घोसला तोड़ दूँगा।

सजल को चिल्लाते देख उसके पापा भी वहाँ पहुँच गये– क्या बात है बेटे! आज स्कूल नहीं जाओगे क्या?

–नहीं और आपको भी ऑफिस नहीं जाने दूँगा।– गुस्से से सजल बोला।

–लॉन में इसने जो घोसला बनाकर चार पंछी पाले हुए थे वे मारे गये।– मम्मी ने बताया।

–मेरे चारों दोस्तों की मौत हो गई।– सजल रुआंसे स्वर में बोला।

–यह तो बहुत बुरा हुआ भाई। उनकी मौत शायद अभी लिखी थी।– पापा ने अफसोस जाहिर करते हुए तसल्ली देनी चाहिए।

–जब तक हत्यारे को सजा नहीं मिलेगी मैं नहीं सुनूंगा आपकी बातें।– सजल पिनकते हुए बोला।

पापा फिर आश्चर्य में पड़ते हुए बोले– हत्यारा ... यानी किसी ने जानबूझकर उनकी हत्या की है। मगर कौन करेगा उनकी हत्या? बिल्ली-विल्ली होगी?

–बिल्ली नहीं बिल्लू, उसी ने मेरे दोस्तों की हत्या की है।– सजल बोला।

पापा ने समझाने का प्रयास किया।– पर बेटे, वह क्यों मारेगा? वह तुम्हारा दोस्त है।

सजल ने रोशपूर्वक कहा– काहे का दोस्त, एक नम्बर का बेवकूफ है वह। कल सबके सामने उसने मुझे धौंस दी थी कि मेरे घोसले को तहस-नहस कर देगा।

–ऐसा उसने गुस्से में कहा होगा। गुस्से में आदमी कुछ भी बक जाता है।– पापा ने समझाने की कोशिश जारी रखी।

–नहीं पापा उसी ने यह घिनौनी हरकत की है। उसी ने मेरे घोसले को तोड़ा है और कोई क्यों तोड़ेगा?– सजल ने दोहराया।?

–अच्छा चलो मुझे दिखाओ।– पापा ने कहा।

सजल उन्हें टूटे हुए पड़े घोसले के पास ले गया। पापा ने बारीकी से निरीक्षण करते हुए कहा– बेटा, इसमें तो आग लगी है। आग से जलकर यह हादसा हुआ है।

–पापा बिल्लू बड़ा खतरनाक लड़का है। वह आग भी लगा सकता है।– सजल ने कहा।

–आग बिजली से लगी है। यहाँ बिजली का बल्ब क्या कर रहा है?

–यह बल्ब मैंने लटकाया था रोशनी के लिए।– सजल ने बताया।

पापा ने 'वायर' का मुआयना करते हुए कहा– यह देखो ... यह एक नंगा वायर निकला पड़ा है। इसमें करंट है और इसी की वजह से घास में आग लगने के कारण घोसला जला और उसमें रहने वाले पंछी जल गये।

–लेकिन पापा ... सजल ने कहना चाहा तो पापा ने टोक दिया– यह बताओ यहाँ बल्ब लगाने की जरूरत क्या थी? पंछियों को तो वैसे भी अंधेरे में दिखता है।

सजल को अपनी गलती समझ में आ गई। वह धीमे स्वर में बोला– पर पापा मुझे तो नहीं दिखता। मैंने अपने लिए लगाया था।

–यह आइडिया तुम्हारे दिमाग में आया कहाँ से?– पापा ने जानना चाहा।

–दरअसल मैंने एक बार पढ़ा था। पता नहीं कौन सा पक्षी है जो अपना घोसला बनाने में जुगनुओं का उपयोग करता है ताकि उनकी चमक से रोशनी रहे।– झिझकते हुए सजल ने बताया।

पापा मुस्कुरा दिये– बेकार अपने दोस्त पर शक कर रहा था।

तब तक बिल्लू भी दौड़ता हुआ वहाँ पहुँच गया और बोला– सजल, मैंने सुना तेरा घोसला टूट गया और उसमें रखे सभी परिंदे मर गये।

–हाँ यह देख न!– सजल ने इशारे से बताया।

–मुझे बड़ा अफसोस है। चारों कितने सुन्दर और मासूम थे। पर यह सब हुआ कैसे? देख मैंने कुछ नहीं किया नहीं तो तू मेरा नाम लगाये।– बिल्लू ने सफाई देनी चाहिए।

–मुझे मालूम है। बिजली के करंट से यह दुर्घटना हुई।– सजल ने बताया।

–यह तो बहुत बुरा हुआ यार, बेचारे भोले-भाले

पंछियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।– बिल्लू ने सहानुभूति दर्शाते हुए कहा।

–यह सब मेरी गलती से हुआ।– सजल ने दुःखी स्वर में कहा।

–चल अब जो होना था वह हो गया। तू चिंता मत कर ...। मेरे मामा जी ने बहुत सारे परिन्दे पाल रखे हैं। शाम को मेरे साथ चलना, वहाँ से दो-चार ले आएंगे।– बिल्लू ने कहा।

–सच?- सजल को जैसे यकीन नहीं हुआ।

–हाँ सच, मेरे मामा जी बहुत अच्छे हैं। वे जरूर दे देंगे।– बिल्लू ने यकीन दिलाने की कोशिश की। सजल ने कृतज्ञ भाव से बिल्लू की ओर देखा।

बिल्लू ने चेतावनी दी– लेकिन अब यहाँ लाइट नहीं लगाना।

–लगाऊँगा मगर बहुत दूर रखूंगा। पहले तो बिल्कुल अंदर लगा रखी थी।– सजल ने अपनी गलती स्वीकारते हुए कहा।

–चल स्कूल नहीं चलेगा क्या?– बिल्लू ने पूछा।

–थोड़ी देर से जाऊँगा। पहले इन बेचारे परिन्दों को दफना दूँ।– सजल ने भीगे नेत्रों से कहा।

–चल मैं भी तेरा साथ देता हूँ। मेरे भी दोस्त थे वे।– बिल्लू ने सजल के कंधे पर हाथ रखते हुए ढांढस बंधाते कहा। दोनों दोस्त परिन्दों की अंतिम क्रियाकर्म में लग गये।

पानी सिर्फ पानी ही नहीं है वरन् दवा भी है।

सर्दियों में अधिकतर ठंड का बहाना बनाकर पानी पीना कम कर देते हैं जो ठीक नहीं है। बच्चो! मौसम कोई भी हो पानी कम से कम 2 से 3 लीटर प्रतिदिन अवश्य ही पीना चाहिए। यह केवल शरीर को ठंडा ही नहीं रखता, यह हमें रोगमुक्त एवं स्वस्थ भी रखता है। यह पानी सिर्फ पानी ही नहीं है वरन् दवा से भी कई गुना बढ़कर फायदेमन्द है वह भी पानी के मोल।

अगर पर्याप्त मात्रा में पानी न पिया जाए तो न ही ठीक से रक्त संचार होगा; न ही मांसपेशियां ठीक ढंग से काम करेगी और न ही हमारे शरीर का जहरीला पदार्थ मल-मूत्र के रूप में ही निकल पायेगा। पानी हमारे शरीर का महत्वपूर्ण अंग है। रक्त में इसकी मात्रा 83 प्रतिशत, मांसपेशियों में 75 प्रतिशत, और हड्डियों में 22 प्रतिशत होती है। यह शरीर के अंगों एवं जोड़ों का सुचारू रूप से संचालन के लिए बहुत ही आवश्यक है।

प्रस्तुति : विभा

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

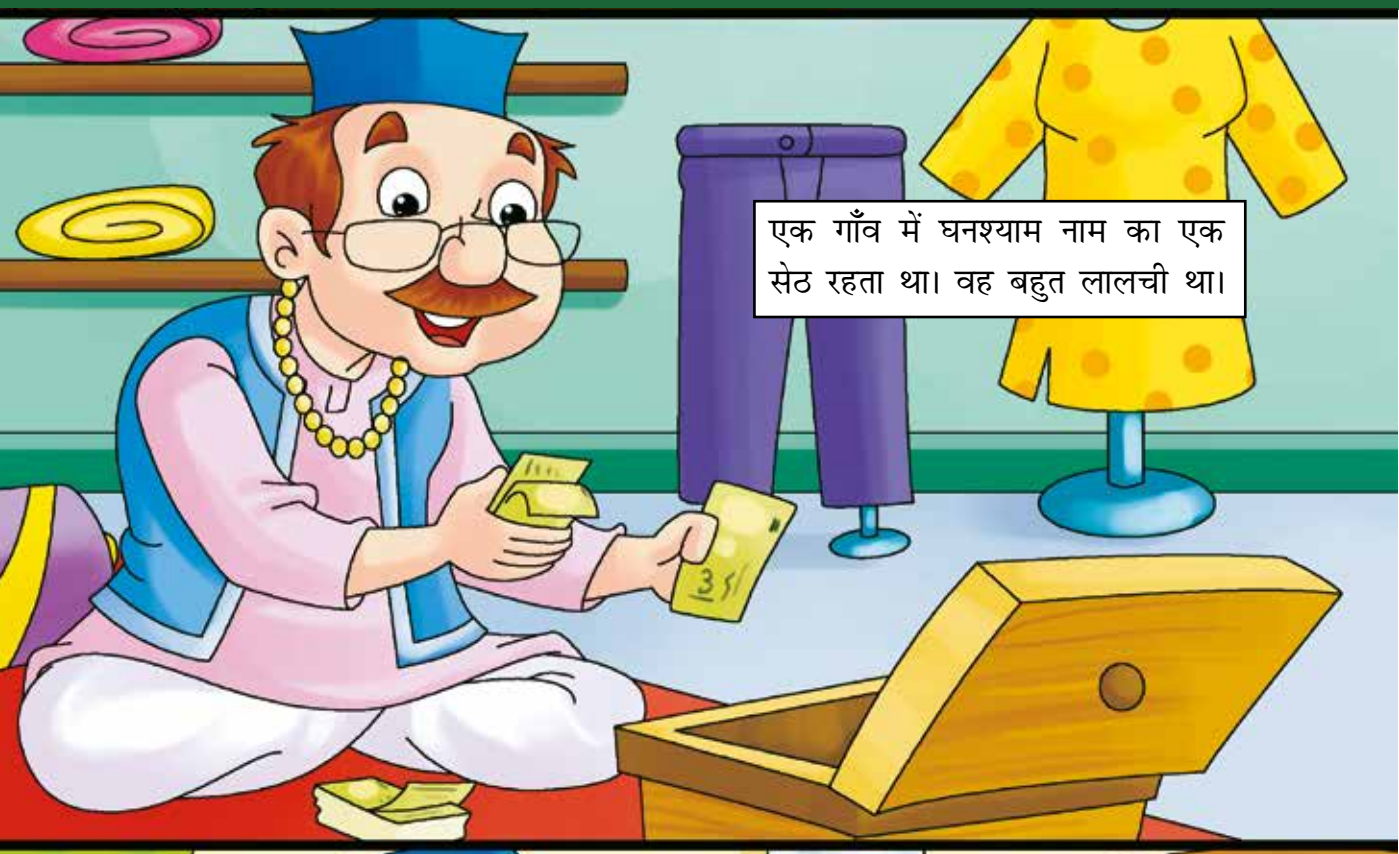

एक दिन घनश्याम के घर से उसकी एक पोटली कहीं गुम हो गई। उस पोटली में 25 सोने के सिक्के थे।
घनश्याम ने उस पोटली को पूरे घर में ढूंढा परन्तु उसे वह कहीं नहीं मिली। उसने पोटली के बारे में अपने सभी नौकरों से पूछा परन्तु किसी को भी उसके बारे में कुछ नहीं पता था।
कुछ दिनों बाद घनश्याम के घर काम करने वाला नौकर सुरेश अपनी पुत्री रेखा को लेकर आया। सुरेश अपने काम में व्यस्त हो गया और रेखा घर के पिछवाड़े में खेलने लगी। खेलते-खेलते उसे कचरे के ढेर में एक पोटली पड़ी हुई दिखाई दी।

सुरेश और रेखा वह पोटली लेकर घनश्याम के पास गए।
सुरेश ने कहा– साहब, इसमें तो सिर्फ 25 ही सिक्के थे।
घनश्याम ने पोटली को खोलकर देखा और बोला– अरे इसमें तो केवल 25 सिक्के हैं। बाकी 5 सिक्के कहाँ हैं?
घनश्याम ने कहा– तुम बेईमानी कर रहे हो। मैं तुम्हें पंचायत में ले जाऊँगा।

घनश्याम ने कहा– मुखिया जी, इसने मेरी सोने की सिक्कों से भरी पोटली चुराई है जिसमें 30 सिक्के थे।
सुरेश ने कहा– नहीं, मुखिया जी इसमें सिर्फ 25 ही सिक्के थे।
मुखिया ने पूछा– घनश्याम, पक्का पोटली में 30 ही सिक्के थे।
घनश्याम ने कहा– मुखिया जी, इसने पहले मेरे सोने के सिक्कों की पोटली चुराई फिर वापिस करते समय उसमें से पाँच सिक्के चुरा लिए।
घनश्याम ने कहा– हाँ, मुखिया जी।
मुखिया ने कहा– तो फिर ये पोटली तुम्हारी नहीं है। ये पोटली किसी और की है क्योंकि तुम्हारी पोटली में 30 सोने के सिक्के थे और इसमें 25 सिक्के ही हैं तो यह पोटली सुरेश को उसकी ईमानदारी के रूप में दी जाती है और घनश्याम तुम्हारी पोटली की खोज की जाएगी।
शिक्षा : झूठ बोलना एवं लालच करना दोनों ही गलत हैं। इसका फल अवश्य ही मिलता है।

प्रेरक-प्रसंग : हरजीत निषाद

परिश्रम

परिश्रम का जीवन में बहुत महत्व है। जीवन में परिश्रम खत्म तो जीवन की गति भी रूक जाती है। परिश्रम नहीं तो जीवन में उन्नति और विकास भी रूक जाता है।

हमारे स्वास्थ्य के लिए भी मेहनत एवं श्रम करना अत्यन्त आवश्यक है। सुन्दर भविष्य भी उन्हीं का है जो श्रम करते हैं। कुछ आदमी भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं पर भाग्य भी उनका ही साथ देता है जो परिश्रम करते हैं। यदि तुम महान और बड़ा बनना चाहते हो तो निश्चय ही तुम्हें साधारण व्यक्तियों से अधिक श्रम करना पड़ेगा। संसार में जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, वे अपने परिश्रम से ही महान हुए हैं।

बच्चों! तुमने राइट बंधुओं का नाम तो सुना ही होगा? वे दो साधनहीन बालक थे परन्तु उनके हृदय में ऊँचे उद्देश्य की उमंगे हिलोरे लेती रहती थीं। उनके नाम थे ऑरविल और विल्बर। अमेरिका में रहने वाले राइट बंधुओं को वायुयान का आविष्कारक माना जाता है। वर्षों तक उन्होंने बाइसिकल के साथ काम किया और संतुलन बनाने का गहरा अध्ययन किया। 1900 से 1903 तक उन्होंने ग्लाइडर पर काम करके पायलट का कौशल हासिल किया। उनकी बाइसिकल की दुकान के कर्मचारी चार्ली टेलर ने भी इनके साथ बहुत काम किया। अपने कठिन परिश्रम और लगन से आखिरकार एक दिन राइट बंधुओं ने विमान बनाकर उसे उड़ाने में कामयाब रहे। यह सब उनकी मेहनत, लगन और परिश्रम का ही परिणाम था।

कविता : डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

भारत देश हमारा

तीन रंगों का बना तिरंगा,
निर्मल गंगा की धारा।
इस पर सारे मुग्ध भारतवंशी,
सबकी आँखों का तारा।।

प्राणों की बलि चढ़ा दी,
कितने वीर हमारा।
हँस-हँस के सब गोली खाये,
भारत माँ का दुलारा।।

धर्म जातियां भिन्न यहाँ की,
है सबका बड़ा दुलारा।
गुण गाते हैं इसके सारे,
प्राणों से भी है प्यारा।।

ऊँचे-ऊँचे पर्वत राजा,
नील गगन है न्यारा।
दुनिया में सबको है प्यारा,
भारत देश हमारा।।

बाल कविता : अशोक 'आनन'

हमें है प्यारा, ध्वज हमारा

तीन रंग हैं इसमें प्यारे,
रंगों में जो रंग हैं न्यारे।
देते हैं सन्देश हमें जो,
हैं जीवन के आदर्श हमारे।
नयनों का तारा, ध्वज हमारा।।

रंग केसरिया त्याग सिखाता,
महिमा उसकी हमें बताता।
दूत शान्ति का रंग सफेद,
बनकर जीवन राह दिखाता।
सबसे न्यारा, ध्वज हमारा।।

रंग हरा हरियाली का,
और प्रतीक खुशहाली का।
चक्र प्रतीक है नीला इसमें,
सत्य-धर्म रखवाली का।
स्वप्न सुनहरा, ध्वज हमारा।।

आलेख : कमल जैन

भारत की शान तिरंगा

हर वर्ष 15 अगस्त और 26 जनवरी को हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे को सरकारी और गैरसरकारी इमारतों पर बड़ी शान और गर्व के साथ फहराया जाता है। ध्वज में सबसे ऊपर केसरिया रंग त्याग और बलिदान का प्रतीक है। बीच का सफेद रंग शान्ति, अहिंसा व प्रेम भावना का प्रतीक है। ध्वज का तीसरा हरा रंग वीरता, विश्वास व कृषि प्रधान देश का प्रतीक है। झंडे की बीच की पट्टी पर बना चक्र निरन्तर आगे बढ़ते रहने का प्रतीक है।

हमारा राष्ट्रीय ध्वज करीब सौ वर्ष पुराना है। सन् 1907 में इसे जर्मनी के बर्लिन शहर में एक आम सभा में अपने विचार प्रकट करने से पूर्व मैडम भीकाजी कामा ने फहराया था तथा इसे उन्होंने अपनी कल्पना के मुताबिक ही बनाया था। हाँ यह ध्वज आज की तरह था। इसमें लाल, पीली तथा हरी तीन तिरछी धारियां थीं। सबसे ऊपर धारी में कमल का फूल और सात सितारे बने हुए थे। बीच की पीली धारी में 'वन्देमातरम्' लिखा हुआ था और सबसे नीचे हरी धारी में सूर्य, चन्द्रमा व एक तारा बना हुआ था। मैडम कामा ने इस ध्वज को भारत से अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए बनाया था ताकि इस झंडे के तले हिन्दुस्तानियों की एकता बनी रहे व अंग्रेजों से डटकर मुकाबला कर सकें। इस ध्वज का सभी हिन्दुस्तानियों ने तहेदिल से स्वागत किया और इसी की बदौलत उग्र आंदोलन करने की गुपचुप योजनाएं देश-विदेश में बनाने लगे।

22 अगस्त, 1917 में होमरुल आंदोलन के दौरान लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक व श्रीमती एनीबेसेंट ने एक और ध्वज बनाया। इस नये ध्वज में पाँच लाल व चार हरे रंग की पट्टियां थीं। इसके बीच में सुर्ख लाल रंग के सितारे बने थे। दाहिनी और चाँद तारे व बाईं ओर इंग्लैंड का ध्वज यूनियन जैक बना था। चूंकि इस ध्वज में 'यूनियन जैक' था। इस कारण उस समय देश के चर्चित नेताओं ने इसका विरोध किया तथा इसके खिलाफ नेताओं ने काले वस्त्र पहनकर मौन जुलूस निकाले। बाद में महात्मा गाँधी ने इस ध्वज प्रकरण को नया मोड़ देते हुए पंजाब के लाला हंसराज से एक ध्वज बनाने को कहा। हाँ, लाला हंसराज ने जो ध्वज बनाया उसमें लाल और हरे

रंग की दो पट्टियां थीं जो हिन्दू, मुस्लिम एकता की प्रतीक थीं। इस ध्वज को गम्भीरता से देखने के बाद गाँधी जी ने इसमें कुछ परिवर्तन किया। इस ध्वज में शान्ति के प्रतीक श्वेत रंग की एक पट्टी को जोड़ने की सलाह दी। इस तरह ध्वज तिरंगा हो गया। कुछ कांग्रेसी नेताओं के सुझाव पर ध्वज की श्वेत पट्टी में चरखे को भी सम्मिलित कर दिया गया। इस ध्वज को 4 जुलाई, 1922 में अहमदाबाद के कांग्रेस अधिवेशन में फहराया गया। लाल व हरे रंग को मजहब से जोड़ने के कारण इस ध्वज का भी जमकर विरोध हुआ।

राष्ट्रीय ध्वज के संदर्भ में कई विवाद चलते रहे। 13 मार्च, 1931 में राष्ट्रध्वज निर्माण हेतु सात सदस्यों की एक स्पेशल कमेटी बनाई गई। इस कमेटी ने विरोधों और सुझावों पर गम्भीरता से विचार करने के बाद राष्ट्रीय ध्वज में कुछ सुधार किया। साथ ही रंगों की नई व्याख्या भी की।

नये ध्वज में लाल रंग के स्थान पर बलिदान व त्याग के प्रतीक केसरिया रंग को सबसे ऊपर रखा। शान्ति के प्रतीक श्वेत रंग को बीच में तथा तीसरे हरे रंग को विश्वास व वीरता का प्रतीक माना। ध्वज में चरखे को हटाकर धर्मचक्र को सम्मिलित किया। इसे सारनाथ स्थित अशोक की लाट से लिया गया।

15 अगस्त, 1947 को जब हमारा देश आजाद हुआ तो लाल किले पर इसी ध्वज को 'आजादी' का प्रतीक के रूप में अपार हर्ष के साथ फहराया गया था। बाद में ध्वज को स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार कर लिया गया। यह एक अलग बात है कि तिरंगा खादी का ही बनाया जाता है। इस ध्वज का अपमान करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही भी की जाती है।

कहानी : कल्पनाथ सिंह

संगठन जिन्दाबाद

चन्दनवन में एक से एक नये-पुराने हरे-भरे छायादार वृक्ष थे। बगल में एक नदी बहती थी। नदी से थोड़ी दूर चन्दनवन के किनारे एक विशाल बरगद का पेड़ था। चन्दनवन के तमाम छोटे-बड़े पशु-पक्षी घूम-फिरकर थके-मांदे आते। नदी में पानी पीते और उस विशाल बदगद के पेड़ की टहनियों पर पक्षी किलोलें करते। पशु बरगद की छाया में आराम करते।

चन्दनवन के सभी पेड़-पौधे, पशु-पक्षी बरगद दादा का बहुत आदर-सम्मान करते थे। बरगद दादा भी सभी पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों को बच्चों की तरह प्यार-दुलार देते थे। नई-नई बातें बताते। ज्ञान-विज्ञान की जानकारी नई-नई कहानियों के माध्यम से देते।

इधर पेड़-पौधे और जंगलों का तेजी से कटान के कारण चन्दनवन के वृक्ष भी काफी चिन्तित हो गये थे क्योंकि अन्य जंगलों से अधिक मूल्यवान वृक्ष जैसे पुराने साखू, सागौन, शीशम, आम, इमली, महुआ, जामुन, बरगद, पीपल आदि के पेड़ बहुतायत से चन्दनवन में थे और चन्दन के पेड़ों की तो गिनती ही नहीं थी। इन कीमती वृक्षों के कारण चन्दनवन पर सबकी नजर टिक जाती थी। सभी चन्दनवन पर ललचाया करते थे।

संयोग की बात कि कुछ ही दिन में सचमुच चन्दनवन को एक ठेकेदार ने खरीद लिया। एक दिन वह ठेकेदार अपने लोगों के साथ आया और देख-दाखकर चला गया। दूसरे दिन नये-नये मजबूत बेंत (हत्थे) लगे कुल्हाड़े भी पेड़ों को काटने के लिए आ गये। ठेकेदार का टेंट उसी विशाल बरगद के नीचे गड़ गया। कुल्हाड़े भी टेंट में रख दिये गये।

यह सब देखकर चन्दनवन के सारे पेड़-पौधों में खलबली मच गई। बिना एक दिन भी इन्तजार किये उसी रात चन्दनवन के कुछ नये-पुराने वृक्ष बरगद दादा के पास आये। घबराहट मे आँखों में आंसू भरकर बरगद दादा से बोल पड़े– दादा! अब तो हम लोगों के विनाश के भी दिन आ गये। कोई उपाय बताएं कि आपके रहते हम लोगों का विनाश रूक जाये।

–अरे भाई, तुम्हीं लोगों का क्यों मेरा विनाश तो सबसे पहले होगा।

–दादा, हम मर-मिटेंगे लेकिन आपका विनाश नहीं

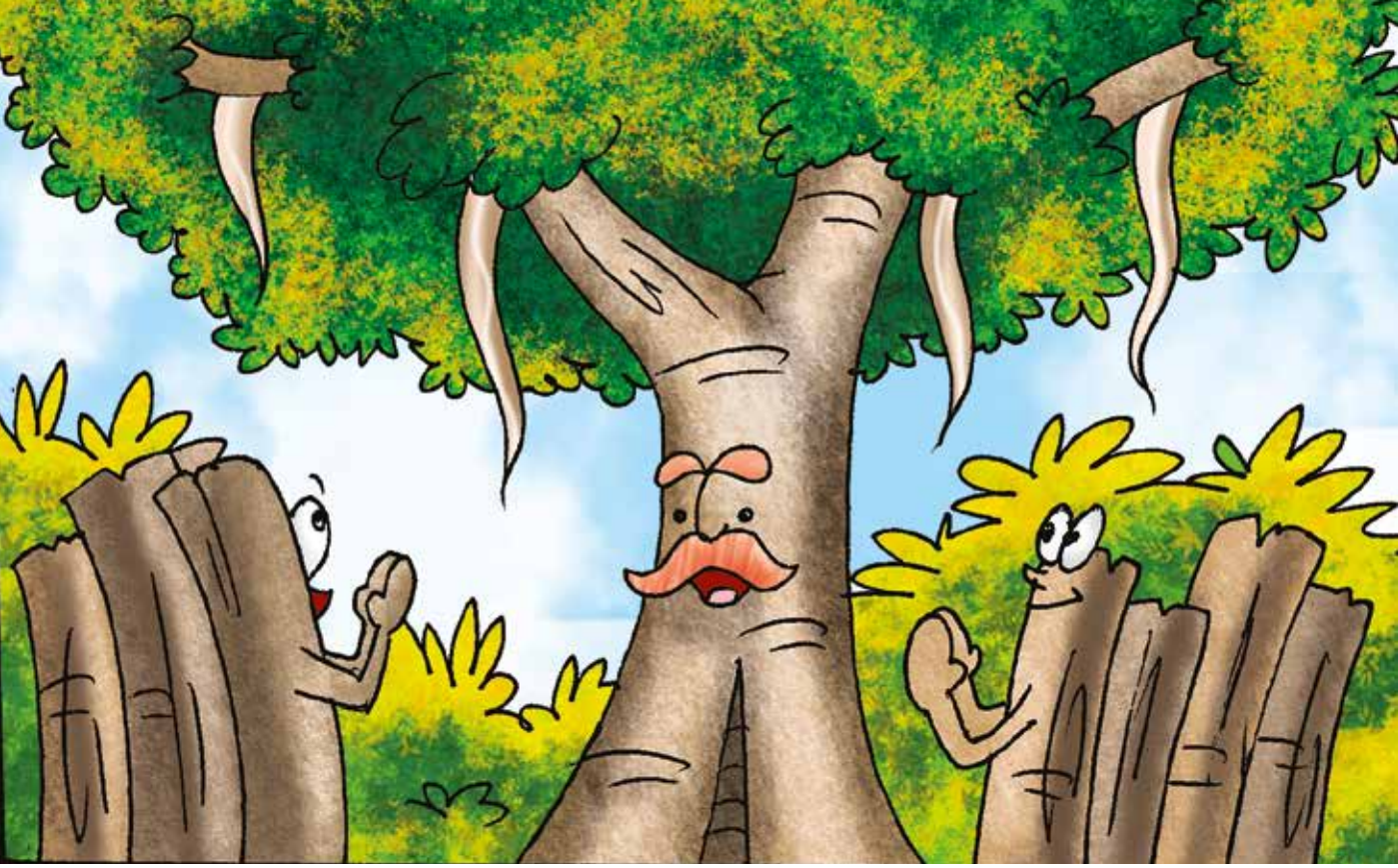

होने देंगे।– इतना कहकर सभी बिलखने लगे और गुस्से में अपना हाथ-पाँव पीटने लगे।

तभी बरगद दादा बोल पड़े– बच्चों! धैर्य से काम लो। संकट के समय न तो क्रोध किया जाता है और न घबराहट से आत्मविश्वास खोया जाता है। संकट के समय तरकीब से काम लिया जाता है समझे।

–तो आप बताइये दादा कि हम लोगों को कौन-सी तरकीब करनी चाहिये।

–देखो भाई! पहली बात तो यह है कि संकट के समय आपस में संगठन सबसे जरूरी है। तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या आप लोग संगठित हैं?

–हाँ दादा, हम सभी लोग संगठित हैं। हम एक-दूसरे के लिये सब कुछ करने के लिए तैयार हैं।

–अच्छा, मान लिया कि तुम लोग संगठित हो और एक-दूसरे के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हो लेकिन जो उधर कुल्हाड़ों में बेंत लगे हुए हैं वे भी तो तुम्हारे ही भाई हैं। अगर हम और तुम में से कोई बेंत बनकर कुल्हाड़ों का साथ नहीं देंगे तो अकेले कुल्हाड़े तुम लोगों का क्या बिगाड़ लेंगे? सो क्या तुम लोगों ने अपने भाई, उन बेटों से भी बात की है।

–नहीं दादा, उनसे बात तो नहीं किये हैं।

इतना सुनते ही इमली बोल पड़ी– भइया शीशम! बरगद दादा ठीक कहते हैं। संगठन की मजबूती के लिए छोटे-बड़े सबका एक साथ होना बहुत जरूरी है। अगर हमारे भाई उन कुल्हाड़ों का साथ नहीं देंगे तो कुल्हाड़े क्या कर लेंगे?

बरगद दादा और पेड़ों की बातें कुल्हाड़ों में लगे बेंत भी सुन रहे थे। सारे के सारे बेंत कुल्हाड़ों से निकलकर बरगद दादा के पास (जहाँ सभी पेड़ बातें कर रहे थे) पहुँच गये और हाथ

जोड़कर बोल पड़े– दादा! हम सारे के सारे आपके साथ हैं। बताइये कि हम लोगों को क्या करना है?

–बेटे तुम लोग संगठन के साथ आ गये। इससे बड़ी खुशी की कोई बात ही नहीं है। अब तुम लोग कसम खाओ कि हम कुल्हाड़ों का साथ नहीं देंगे।

–हम सभी कसम खाते हैं दादा, और हम सभी लोग अभी आपके कोटर में छिप जाते हैं।

–शाबाश बेटे। कोई भी संगठन त्याग और बलिदान से ही मजबूत होता है। तुम्हारे संगठन को देखकर मैं बहुत खुश हूँ। अब मुझे विश्वास है कि ठेकेदार हम लोगों के संगठन की मजबूती को समझ जायेगा और हम लोगों को काटने का इरादा छोड़ देगा।

इतना सुनते ही महुआ बोल पड़ा– दादा और अगर ठेकेदार नहीं माना तो?

हम लोग उसे और उसके आदिमियों को जंगल में घुसने नहीं देंगे। हम लोग उनके ऊपर टूट-टूटकर गिर पड़ेंगे। सभी एक-साथ चिल्ला पड़े।

तभी बरगद दादा बोल पड़े– जब उनके कुल्हाड़ों में बेंत ही नहीं होंगे तो उनका कोई बस नहीं चलेगा। आप लोग इसी तरह संगठित रहे। सब संकट टल जायेगा।

चन्दनवन के पेड़ों और बरगद दादा की बातें चुपके-चुपके ठेकेदार भी अपने टेंट में सोया-सोया सुन रहा था। अपने कुल्हाड़ों के बेंतों का विद्रोह तथा जंगल के पेड़ों के संगठन को देख-सुनकर वह समझ गया कि इस चन्दनवन के पेड़ों को काटना अब सम्भव नहीं है और अगर मैंने जिद की तो इनके संगठन के कारण मुझको जान-माल की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। मजदूरों पर पेड़ उलट पड़ेंगे तो लेने के देने पड़ जायेंगे। यही सोचकर दूसरे दिन सवेरे-सवेरे ठेकेदार बिना बेंत वाले अपने सारे कुल्हाड़ों को लेकर अपना टेंट उखाड़ा और चुपके से अपने घर को चल दिया।

ठेकेदार का जाना सुनकर सारे चन्दनवन में खुशियां मनाई जानी लगीं। सभी पेड़-पौधे बरगद दादा के पास 'अपना संगठन जिन्दाबाद' का नारा लगाते आये और बरगद दादा को फूलमालाओं से लाद दिया।

तभी बरगद दादा बोल पड़े– देखा, संगठन में बड़ी शक्ति है। जो भी संगठन मजबूत रहता है उसका कभी भी कुछ नहीं बिगाड़ पाता है।

–कहानी की सत्यता को न देखें परन्तु संगठन की प्रेरणा को याद कर लें। संगठित समाज, संगठित देश व विश्व सदा फलता-फूलता है।

कविता : भानुदत्त त्रिपाठी

फलों का राजा

सभी फलों का राजा आम,
अच्छा लगता ताजा आम।

वाह! आम के नाम अनेक,
न्यारे स्वाद एक से एक।

मलिहाबादी, लंगड़ा आम,
छोटा कोई तगड़ा आम।

आम्र, रसाल, अमृत, सहकार,
ये हिन्दी में नाम प्रकार।

लाल-बसन्ती-पीले आम,
कोई बड़े रसीले आम।

आम विटामिन से भरपूर,
करता है कृशता को दूर।

इसकी गुठली का उपयोग,
हरता विविध पेट के रोग।

बाल कविता : सोनी निरंकारी

बीज प्रेम के

बीत गया जो उसको छोड़ो,
नये समय से नाता जोड़ो।
रात ढल गई अब क्या सोना,
आलस के अब बन्धन तोड़ो।।

अब का काम कल पर न टालो,
करना हो सो अभी सम्भालो।
अगले कल को किसने देखा,
गढ़ लो अभी भाग्य की रेखा।।

तूफानों से हाथ मिलाओ,
मुश्किल से न घबराओ।
अपनी हिम्मत कभी न खोना,
घर-घर बीज प्रेम के बोना।।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

अपनी पसन्द पहचानो

कोशी नदी के किनारे एक महर्षि का आश्रम था जहाँ अनेक शिष्य रहकर विद्याध्ययन करते। प्रवीण और नवीन भी उनके शिष्य थे।

एक दिन महर्षि प्रवीण और नवीन को लेकर कहीं घूमने जा निकले। सुबह की बेला थी। वापसी मे महर्षि एक पेड़ के पास ठहरे। वह बेर का पेड़ था। उसके खूब पके बेर थे। बड़े-बड़े और सुन्दर बेरों से लदा था पेड़। उसमें कांटे भी थे।

महर्षि ने स्वयं कई बेर तोड़े। फिर उन्हें प्रवीण को खाने के लिए दिये। उसके बाद महर्षि ने पेड़ से कुछ कांटे तोड़े और उन्हें नवीन की ओर बढ़ाए। नवीन ने महर्षि से कांटे ले लिये। मगर उसकी समझ में नहीं आया कि वह उनका क्या करे?

"अब आश्रम चलो," थोड़ी देर बाद महर्षि बोले।

तीनों उधर ही बढ़े।

रास्ते में नवीन ने साहस कर महर्षि से पूछा– "आपने प्रवीण को बेर दिये और मुझे कांटे। उसने बेर खा लिये। मैं इन कांटों का क्या करूँ?"

"यह तो तुम्ही जानो।" महर्षि ने दो टूक कहा।

"मतलब?" नवीन को महर्षि की बात अटपटी लगी।

प्रवीण की भी समझ में नहीं आया कि महर्षि ने ऐसा क्यों किया?

"देखो नवीन, मैंने तुम दोनों को जो कुछ भी दिया है, वह तुम दोनों की अलग-अलग पसन्द की चीज है।" महर्षि ने आगे कहा– "अपनी

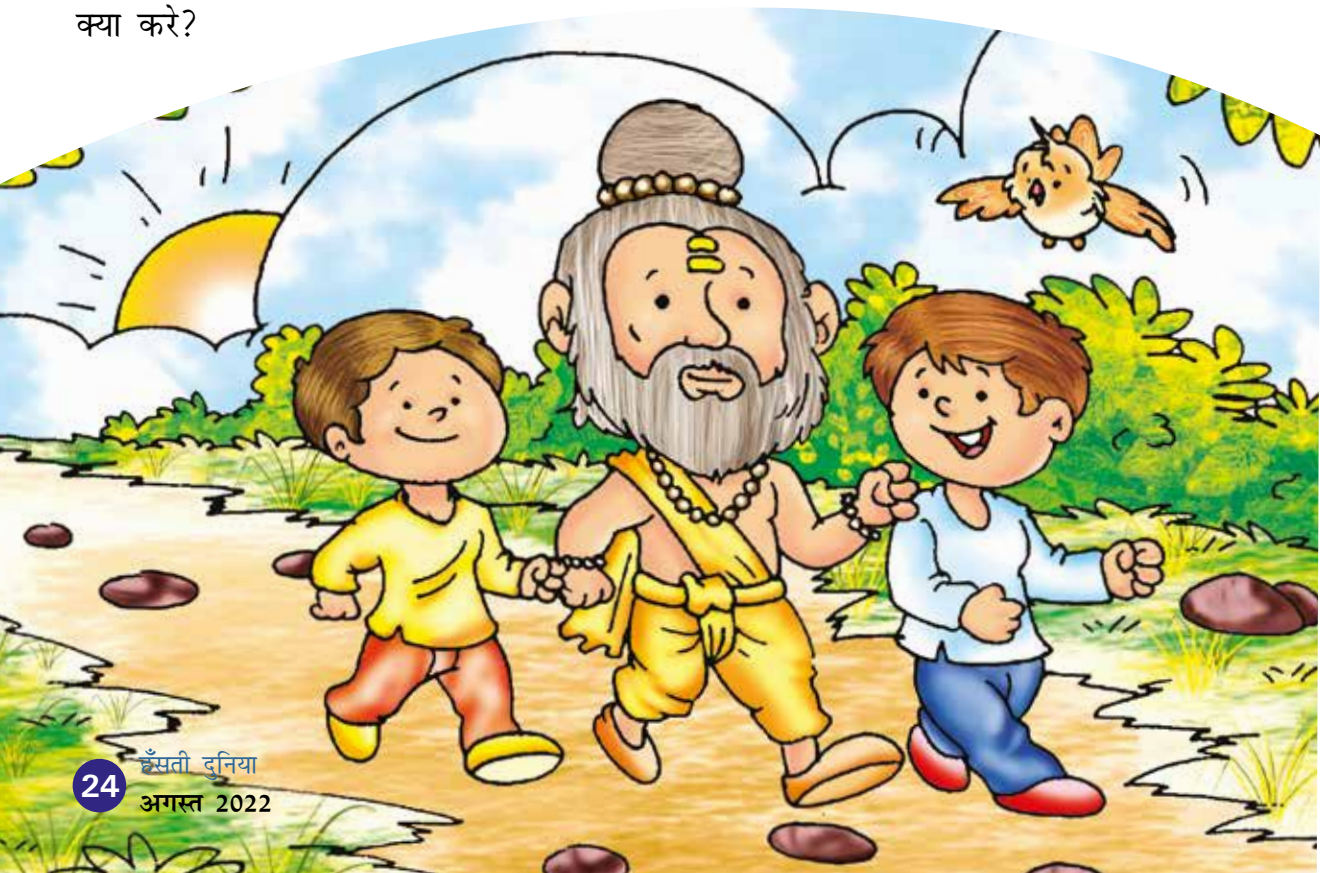

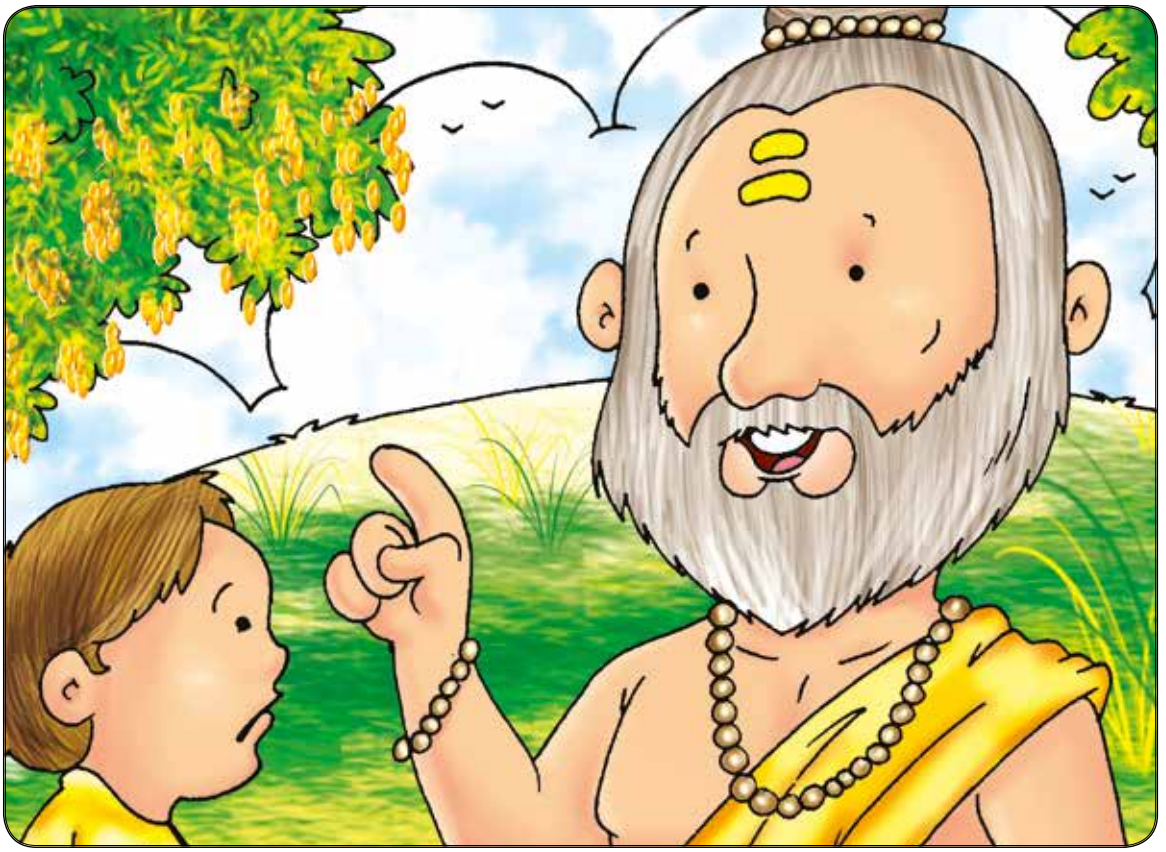

पसन्द पहचानो। मैंने अपनी ओर से तुम्हें कुछ नहीं दिया है। अतएव अचरज मत करो।''

''मेरी पसन्द की चीज?'' नवीन को अब भी कुछ समझ में नहीं आया।

''हाँ, नवीन।''

''वह कैसे?'' नवीन अब भी भौचक्का था।

''पेड़ में फल और कांटे दोनों थे। तुम किसे अच्छा और बुरा मानते हो?'' महर्षि ने नवीन से पूछा।

''फल अच्छे और कांटे बुरे।'' नवीन ने साफ कहा।

''कोई भी व्यक्ति क्यों न हो उसमें कुछ अच्छे गुण होते हैं तो कुछ बुरे अवगुण भी।'' महर्षि ने बताया, ''केवल अच्छाई ही अच्छाई या फिर बुराई ही बुराई, ऐसा नहीं होता।''

''तो फिर?''

''मगर तुम किसी भी व्यक्ति में सिर्फ बुराई ढूंढते हो, उसकी अच्छाई की ओर तुम्हारी निगाह कभी जाती ही नहीं।'' महर्षि ने आगे कहा– ''जबकि प्रवीण दूसरे व्यक्ति में सिर्फ अच्छाई ढूंढता है और उसे ग्रहण भी करता है। अपने जीवन में अपनाता है। यह तुम दोनों का अलग-अलग स्वभाव है, अपनी पसन्द है। इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने प्रवीण को फल और तुम्हें कांटे दिये। अपनी पसन्द की चीज पाकर तुम्हें मुझसे कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। है न?''

महर्षि का गूढ़ कथन अब नवीन को भली-भांति समझ में आ गया। उस दिन से उसने अपने में सुधार लाना शुरू कर दिया। अब वह प्रवीण की तरह ही आपने सहपाठियों में अच्छाई ढूंढता। उसे जीवन में अपनाता भी। सदैव दूसरे की शिकायत करने वाला नवीन एकाएक ऐसा बदल गया कि अपने सहपाठियों की अच्छाई की सराहना करते कभी नहीं थकता।

अपने खून से रंगूगी खादी

क्रांतिकारी भगत सिंह अपने गुरु करतार सिंह सराभा के अंधभक्त थे। उनके प्रयासों से सन् 1928 में सराभा के चित्र का अनावरण होना था जिसके लिए भगवतीचरण वोहरा एक खादी का कपड़ा खरीदकर लाये जिसे लाल रंग से रंगने के लिए वोहरा जी ने अपनी पत्नी को दिया तो उस वीर नारी ने कहा– ''मैं इसे लाल रंग में अपने लहू से रंगूगी'' और उन्होंने पैनी ब्लेड से अपनी उंगलियां चीरकर खून से खादी को रंग डाला।

अपने लहू से खादी को रंगकर शहीद करतार सिंह सराभा को सम्मान देने वाली वीर नारी कोई और नहीं बल्कि क्रांतिकारियों का सिरमौर दुर्गा भाभी थी।

क्रांतिकारी विचारों से ओत-प्रोत दुर्गा भाभी नौजवान सभा की सक्रिय सदस्य थी और अपने पति भगवतीचरण वोहरा की सहयोगी थी। साइमन कमीशन वापिस जाओ के विद्रोह के नायक लाला लाजपतराय की निर्मम हत्या का बदला लेने के लिए क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरु ने 18 दिसम्बर 1928 को लाहौर शहर के व्यस्त बाजार में हत्यारे सांडर्स को सरेआम गोलियों से छलनी कर दिया तो अंग्रेज सरकार इनके पीछे पड़ गयी। जिसके कारण स्वतंत्रता के आन्दोलन को जीवित रखने के लिए भगत सिंह को भगवतीचरण वोहरा द्वारा लाहौर से बाहर निकालना आवश्यक हो गया तो उन्हें लाहौर से कोलकाता पहुँचाने का जिम्मा दुर्गा भाभी को ही सौंपा।

अपने कार्य को अंजाम देने के लिए दुर्गा भाभी ने भगत सिंह को सूट-बूट व हैट पहनाकर साहब बनाया और अपने बेटे को गोद में लेकर उनकी पत्नी बनकर उन्हें सकुशल कोलकाता पहुँचा दिया और अंग्रेजों के जासूस भगत सिंह को लाहौर में ही ढूंढते रहे।

ऐसी वीरांगना दुर्गा भाभी के त्याग व बलिदान को भुलाया नहीं जा सकता क्योंकि दुर्गा भाभी क्रांति की मशाल थी जो स्वयं जलकर क्रांतिकारियों को मार्गदर्शन देती थीं। इन्होंने क्रांतिकारी नौजवान सभा के सिरमौर– भगवतीचरण वोहरा, चन्द्रशेखर आजाद व भगत सिंह के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

और अन्त में 92 वर्ष की उम्र में 14 अक्टूबर 1999 को गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) में आजादी की यह मशाल सदा-सदा के लिए हमसे विदा हो गयी।

धन्य है वह धरा जिसमें ऐसे बलिदानियों का जन्म हुआ।

बाल कविता : सुमेश निषाद

चुनचुन चिड़िया आती है

ठंड दूर जब जाती है।
गर्मी तब आ जाती है।
तेज धूप संग लाती है।
आकर बहुत सताती है।

चुनचुन चिड़िया आती है।
गर्म थपेड़े खाती है।
गर्मी सही न जाती है।
पत्तों में छिप जाती है।

माँ इक बरतन लाती है।
पानी से भर आती है।
चिड़िया प्यास बुझाती है।
पीकर वह उड़ जाती है।

भोर हुए उठ जाती है।
दाना तुनका खाती है।
अपनी भूख मिटाती है।
मीठे गीत सुनाती है।

बाल गीत : श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ

पेड़ अगर होंगे पृथ्वी पर,
खुशहाली हरियाली होगी।
ईंधन, फल, औषधियां होगीं,
वायु सुखद मतवाली होगी।।

पेड़ हमें देते हैं वर्षा,
जिससे कृषक फसल उपजाते।
पेड़ हमें ऑक्सीजन देते,
जिससे सहज सांस ले पाते।।

तुम इनके रोपण पोषण का,
मन से अब संकल्प उठाओ।
ऐसे पर्यावरण बचाओ,
पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ।।

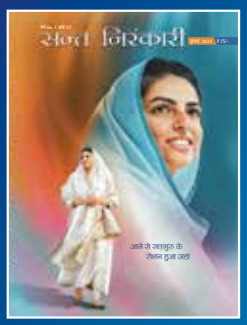

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

लेख (जीव-जन्तु) : परशुराम शुक्ल

एक अद्भुत पक्षी कीवी

न्यूजीलैंड के विभिन्न द्वीपों में पाया जाने वाला पक्षी कीवी एक विलक्षण प्राणी है। इसका शरीर मटमैले भूरे रंग का होता है तथा इस पर भूरे रंग के मुलायम चमकदार बाल होते हैं। कीवी के डैने बहुत छोटे होते हैं। अत: यह उड़ नहीं सकता। कीवी एक बड़े जंगली मुर्गे के बराबर ऊँचा होता है। सामान्यतया इसकी ऊँचाई पैंतालिस से पचास सेंटीमीटर तक होती है। कीवी की पूंछ नहीं होती तथा चोंच काफी लम्बी होती है। इसी चोंच के सिरों पर नासिका रन्ध्र होते हैं। ये नासिका रन्ध्र कीवी को भोजन की तलाश में विशेष रूप से सहायता करते हैं। कीवी का प्रमुख भोजन जमीन पर रेंगने वाले छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े तथा केंचुए हैं। इन्हें पाने के लिए वह अपनी घ्राण शक्ति का प्रयोग करता है तथा जमीन के भीतर छोटे-छोटे बिलों और छेदों में चोंच डालकर केंचुओं तथा अन्य कीड़ों-मकोड़ों को बाहर निकाल लेता है।

पक्षी विशेषज्ञों का मत है कीवी अपनी प्रवृत्ति से आलसी था। इसे सूर्य का प्रकाश पसन्द नहीं था। अत: यह सारे दिन जंगलों में किसी सुरक्षित स्थान पर आंखें बन्द किये पड़ा रहता था और रात में भोजन की तलाश में निकलता था। इसका परिणाम यह हुआ कि इसके पंखों की उड़ने की क्षमता ही समाप्त हो गयी बल्कि इसकी दृष्टि भी इतनी कमजोर हो गई कि इसे अपने पास का भी प्राणी ठीक से दिखाई नहीं पड़ता है।

कीवी एक अत्यन्त डरपोक तथा शर्मिला जीव है तथा जंगलों में नमी वाले भागों में रहना अधिक पसन्द करता है। रात्रि में भोजन की खोज करते समय शत्रु निकट होने पर यह उसका सामना नहीं करता बल्कि एक विचित्र प्रकार की आवाज करता हुआ डरकर भागता है। केंचुओं और कीड़ों-मकोड़ों के अतिरिक्त इसे रसदार फल बहुत पसन्द हैं।

कीवी अपना घोसला जमीन पर ऊँचे स्थान पर बने बिलों में बनाता है। यहीं मादा कीवी एक बार में एक से तीन तक सफेद रंग के अंडे देती है। ये अंडे काफी बड़े तथा भारी होते हैं। कभी-कभी इनका वजन आधा किलो तक होता है। शुतुरमुर्ग, रिया तथा कैसोवरी के समान अंडे सेने का काम नर कीवी करता हैं। इन अंडों से बच्चे निकलने में ढाई से तीन माह तक का समय लगता है। बच्चों की परवरिश का कार्य भी नर कीवी करता है। यह इनकी तब तक देखभाल करता है जब तक कि ये आत्मनिर्भर नहीं हो जाते।

बाल कहानी : राजेन्द्र कुमार

अनोखी सजा

आज स्कूल बन्द था। सुबह की वेला थी। दीपक, परेश, पिंकी, अचला और मनीष अपने घर से कुछ दूर पर पेड़ की छांव में खेल रहे थे। अचानक एक रिक्शा घर के समीप आकर ठहरा। मामा जी उससे उतरे। ज्योंही बच्चों की नजर उन पर पड़ी, वे दौड़ पड़े। करीब आकर चिल्लाए- ''मामा जी आए, मामा जी आए।''

मामा जी ने परेश से पूछा– ''घर में कौन है?''

''मम्मी।''

''और पापा जी?''

''वह कल ही ऑफिस के काम से बाहर गये हैं। आज किसी समय लौटेंगे।''– पिंकी ने जवाब दिया।

मामा जी बच्चों के साथ घर में घुसे। बच्चों का शोरगुल सुनकर मम्मी रसोईघर से बाहर आई। मामा जी ने लड्डू का एक पैकेट उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा– ''लो, बच्चों में बांट दो।''

''पहले हाथ धोओ।'' मम्मी बच्चों से बोली– ''फिर सबको लड्डू दूंगी।''

जब बच्चे हाथ धोकर आ गये तो मम्मी ने प्रत्येक को एक-एक लड्डू दिया। बच्चे लड्डू खाते हुए बाहर खेलने निकल गये।

बचे हुए लड्डू बच्चों की नजरों से बचाकर मम्मी ने अच्छी तरह रख दिये। फिर मामा जी से उनका हाल-चाल पूछने लगी।

दोपहर में मम्मी ने कुछ लड्डू अड़ोस-पड़ोस में बांट देने की सोची। मगर ज्योंही उसने लड्डू का पैकेट बाहर निकाला, देखकर हैरान रह गई। कई लड्डू गायब थे। फिर मम्मी समझ गई कि यह सारी शैतानी परेश की है।

घर में जब भी किसी तरह की मिठाई आती है, मम्मी उसे कहीं भी छिपाकर क्यों न रख दे, परेश मौका पाकर उसे खोज ही लेता है और फिर उसमें से कुछ चुराकर चुपचाप खा जाता है। यह उसकी पुरानी आदत रही है। यही नहीं, पूछने पर वह चुराकर मिठाई खाने की बात कबूल भी नहीं करता। इस तरह वह एक साथ दो गन्दी आदतों का शिकार होता जा रहा था।– मिठाई चुराकर खाना और फिर झूठ बोलना।

अचला और मनीष से मम्मी को पता चल गया कि परेश ने ही लड्डू चुराकर खाया है। फिर भी मम्मी ने कई बार परेश से पूछा– ''बेटा, सच बता दो। लड्डू तुमने चुराकर खाया है?''

''नहीं मम्मी।'' हर बार परेश यही कहता।

''फिर किसने लिए?''

''मालूम नहीं।''

मम्मी हार गई लेकिन परेश सच नहीं बोला।

दूसरे दिन सुबह जब मामा जी चले गये तो मम्मी ने परेश की ये गन्दी आदतें छुड़ानी चाहीं। वह उपाय खोजने लगी। आखिर में उसे एक तरकीब सूझी।

अब वह परेश को जलपान और भोजन के समय केवल मिठाईयां ही खाने के लिए देती जबकि दूसरे बच्चे चावल और रोटियों के साथ दाल-सब्जियां खाते। एक-दो बार तो परेश को मिठाईयां खूब अच्छी लगीं लेकिन फिर उधर से उसका मन उचट गया। अच्छी नहीं लगने लगीं मगर मम्मी उसके सामने तरह-तरह की मिठाईयां ही परोस देती। उसे बोलना पड़ा– ''रोज हर वक्त मिठाईयां खाते-खाते मेरी हालत खराब हो गई है। अब हमें ये सब नहीं चाहिए, बिल्कुल नहीं।''

''फिर क्या चाहिए?'' मम्मी ने पूछा।

''चावल, दाल और सब्जी।'' वह रुआंसा हो बोला।

''पहले वादा करो कि भविष्य में कभी भी चुराकर मिठाई नहीं खाओगे और इस बात को लेकर झूठ भी नहीं बोलोगे। तभी तुम्हें चावल, दाल और सब्जियां खाने को मिलेगीं नहीं तो मिठाईयां ही खानी पड़ेगीं।'' मम्मी ने कड़ा रूख अपनाया।

परेश बोला– ''मैं वादा करता हूँ, अब कभी मिठाई चुराकर नहीं खाऊँगा और न झूठ बोलूँगा।''

''ठीक है, आज मैं तुम्हें खाने के लिए चावल, दाल और दो सब्जियां देती हूँ लेकिन याद रहे, भविष्य में फिर कभी पहले जैसी हरकत की तो जानते हो, क्या सजा मिलेगी?''

''नहीं तो।''

''यही सजा दूँगी। लगातार एक सप्ताह तक हर वक्त तुम्हें केवल मिठाई ही खाने को मिलेगी। दूसरी कोई भी चीज नहीं।''

''बाप रे, फिर तो मैं मर ही जाऊँगा।''– परेश चीखकर बोला।

''तो फिर?'' मम्मी ने परेश की ओर निहारा।

''अब मैं वैसी स्थिति कभी आने ही नहीं दूँगा जिससे मुझे ऐसी सजा झेलनी पड़े।''

''हाँ, अच्छी तरह समझ लो।'' कहकर मम्मी ने परेश के लिए चावल, दाल और सब्जी लाने के लिए रसोईघर की ओर चली गई।

क्या आप जानते हैं?

- मनुष्य के शरीर में 206 हड्डियां होती हैं।
- मनुष्य के शरीर में 750 मांसपेशियां होती हैं।
- मनुष्य की त्वचा में दो लाख से अधिक छिद्र पाये जाते हैं।
- मनुष्य का वैज्ञानिक नाम होमोसेपियन है।
- मनुष्य के शरीर के बालों एवं नाखूनों में नसें नहीं होती अत: इन्हें काटने पर दर्द नहीं होता।
- भारत में सबसे सुन्दर इमारत ताजमहल है।
- अशोक चक्र में 24 तीलियां होती हैं।
- भारत का संविधान बनाने में 2 वर्ष 11 माह 18 दिन का समय लगा था।
- भारत का प्रथम मुख्य सेनापति जनरल के. एम. करिअप्पा थे।
- बछेन्द्री पाल एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला थी।
- श्रीमती इन्दिरा गाँधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी थीं।
- श्रीमती प्रतिभा सिंह पाटिल भारत की पहली महिला राष्ट्रपति थीं।
- नाइट्रस ऑक्साइड ऐसी गैस है जिसको सूंघने पर मुनष्य केवल हँसता ही रहता है।
- सूर्य की किरण सूर्य से पृथ्वी पर 8 मिनट 22 सेकिण्ड में पहुँचती है।
- पृथ्वी से चन्द्रमा 22, 23, 885 मील की दूरी पर है।
- विश्व में सबसे अधिक सोना दक्षिण अफ्रीका में निकलता है।
- विश्व में सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट है जिसकी ऊँचाई 8848 मीटर है।
- चार दिन का सप्ताह तिब्बत में मनाया जाता है।
- यजुर्वेद की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गई है।
- शुक्र ग्रह को भोर का तारा कहा जाता है।
- भारत की पहली बोलती फिल्म आलमआरा थी।
- मंगल ग्रह को लाल ग्रह भी कहा जाता है।
- शुक्र ग्रह को पृथ्वी की जुड़वा बहन कहा जाता है।
- 'गुगली' शब्द क्रिकेट खेल से सम्बन्धित है।
- पश्चिम बंगाल राज्य में चावल अधिक पैदा होता है।
- भरतनाट्यम का आरम्भ तमिलनाडु में हुआ था।
- भालू ऐसा जानवर है जो दु:ख में आदमियों की भांति रोता है।
- हंस 8200 मीटर की ऊँचाई पर भी उड़ सकते हैं।
- अमेरिका के गिद्ध लगभग 100 किलोमीटर तक की दूरी बिना पंख फड़फड़ाए ही पार कर सकते हैं।
- एंडीयन कोंडोर नामक शिकारी पक्षी का वजन 15 किलोग्राम तक होता है।

बाल कविता : अंशु शुक्ला

आओ मिलकर देश बनायें

भारत माँ की बगिया में,
नये-नये फिर फूल खिलायें।
मधुर सुगन्ध बहाकर इनकी,
सारा जग फिर से महकायें।।

सत्य न्याय के पथ पर चलना,
निज जीवन आदर्श बनायें।
जीवन संघर्षों से लड़ना,
जन-जन को फिर से सिखलायें।।

ज्ञानदीप की ज्योति जलाकर,
एक नया विश्वास जगायें।
मानव में फिर मानवता भर,
मानव को आदर्श बनायें।।

हिन्दू-मुस्लिम सिख-ईसाई,
सब भाई-भाई बन जायें।
अपने-अपने भेद भुलाकर,
आओ मिलकर देश बनायें।।

आओ हम सब खेलते हैं।
मुझे नहीं खेलना, मुझे अपना 'होमवर्क' करना है।
किट्टी। तुमने अपना 'होमवर्क' किया।
नहीं। मैंने तो 'होमवर्क' नहीं किया।

किट्टी तुम्हें 'होमवर्क' करना चाहिए था क्योंकि मैम ने कहा था, ''मैं सबका होमवर्क चैक करूँगी।'' जिसने होमवर्क नहीं किया होगा मैंम उसे सजा देगीं।
लेकिन अब तो छुट्टियां खत्म हो गईं। मैं काम कैसे करूँ?
क्यों न मैं चिंटू की कॉपी मैम को दिखा दूँ? इससे मुझे डांट भी नहीं पड़ेगी।

चलो बच्चों अपना-अपना 'होमवर्क' दिखाओ। सभी बच्चों ने होमवर्क किया है न।
किट्टी ने चिंटू की कॉपी अपने बैग में चुपचाप रख ली थी और चिंटू कॉपी ढूंढ रहा था।
अरे! चिंटू तुम इतने परेशान क्यों हो रहे हो?
मैम मेरी कॉपी नहीं मिल रही।

चिंटू तुम अपनी कॉपी घर पर तो नहीं भूल आए हो?
नहीं किट्टी। मैं लाया था।
किट्टी अपनी कॉपी दिखाओ।
अरे! ये तो चिंटू की लिखाई है।
अरे! यह तो मेरी कॉपी है।
किट्टी तुमने मेरी कॉपी चुरा ली। मुझे याद है तुमने तो अपना होमवर्क भी नहीं किया था।
अरे! हाँ! अरे।
किट्टी हाथ ऊपर करके खड़े हो जाओ। एक तो तुमने काम नहीं किया और फिर तुमने चिंटू की कॉपी भी चुराई।
काश! मैंने झूठ न बोला होता।

कभी न भूलो

❖ साहस के बल पर पराजय को हम विजय में बदल सकते हैं। – **रामधारी सिंह दिनकर**

❖ दूसरों से प्रेम करना अपने आप से प्रेम करना है। – **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

❖ हार मानने वाले बुजदिल, कायर एवं कमजोर प्रकृति के लोग होते हैं।

– **चन्द्रशेखर आजाद**

❖ एक झूठ को छिपाने के लिए दस झूठ बोलने पड़ते हैं।– **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**

❖ अत्याचारी से बढ़कर अभागा कोई दूसरा नहीं क्योंकि विपत्ति के समय उसका कोई मित्र नहीं होगा। – **शेख सादी**

❖ मानव को सत्संग, संतोष, दान और दया का सेवन करना चाहिए। – **स्वामी रामतीर्थ**

❖ जब हम कोई काम करने की इच्छा करते हैं तो शक्ति अपने आप ही आ जाती है।

– **मुंशी प्रेमचन्द**

❖ प्रत्येक कर्तव्य पवित्र है। समर्पित भावना से किया गया कर्तव्य ईश्वर की सर्वोच्च उपासना है। – **स्वामी विवेकानन्द**

❖ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाए सिद्धांतों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए। – **अल्बर्ट आइंस्टीन**

❖ सज्जनों के सत्संग से ही जंग खायी बुद्धि तेज होती है। वाणी से सत्य की वर्षा होती है। उन्नत गौरव प्राप्त होता है। मन शान्त होता है। – **नीति शतक**

❖ जब अपने दोष दिखने लगते हैं तभी से उत्कर्ष का आरम्भ होता है।

– **रामकृष्ण परमहंस**

❖ द्वेष द्वेषी व्यक्ति को ही खा जाता है।

– **तुलसीदास**

❖ दु:ख दूर करने की एक ही औषधि है, मन से दु:खों की चिन्ता न करना। – **महाभारत**

❖ अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन न करना देशद्रोह होता है और अपने को धोखा देना भी। – **अमर वाणी**

❖ मनुष्य के मन में संतोष होना स्वर्ग प्राप्त करने के समान है। – **वेदव्यास**

❖ अधिक धन होने पर भी जो चिन्तित है वह सबसे बड़ा निर्धन है। कम धन रहने पर भी जो सन्तुष्ट रहता है वही सबसे बड़ा धनी है।

– **अश्वघोष**

❖ मोह में हम बुराईयां नहीं देख पाते और घृणा में हम अच्छाईयां नहीं देख पाते।

– **अज्ञात**

संकलन : जगतार 'चमन'

बाल कविता :
महेन्द्र कुमार वर्मा

राखी बांधो प्यारी बहना

प्रीत के धागों के बन्धन में,
स्नेह का उमड़ रहा संसार।
सारे जग में सबसे सच्चा,
होता भाई बहन का प्यार।।

नन्हें भैया का है कहना,
राखी बांधो प्यारी बहना।

सावन की मस्तीली फुहार,
मधुरिम संगीत सुनाती है।
मेघों की ढोल थाप पर,
वसुन्धरा मुस्काती है।।

आया सावन का महीना,
राखी बांधो प्यारी बहना।

धरती ने चन्दा मामा को,
इन्द्रधुनषी राखी पहनाई।
बिजली चमकी खुशियों से,
रिमझिम जी ने झड़ी लगाई।।

राजी खुशी सदा तुम रहना,
राखी बांधो प्यारी बहना।।

कविता : शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

रक्षाबन्धन

भरता है मन में उजियारा,
धागों का त्योहार ये प्यारा।
हर सावन में आने वाला,
भाया है रक्षाबन्धन।।

मीठी-मीठी बातें करता,
घर-आंगन खुशियों से भरता।
नेहों के गुलदस्ते धरता,
आया है रक्षाबन्धन।।

राखी बांधे, सजी कलाई,
हँसते गाते बहन-भाई।
अच्छी-अच्छी ढेर मिठाई,
लाता है रक्षाबन्धन।।

चमकी सबकी आज कलाई,
रक्षा वचन की याद दिलाई।
पवित्र-प्रेम संदेशा लाई,
आई देखो राखी आई।।

ऐसे बंधी बिल्ली के गले में घंटी

छोटे-छोटे चूहे एक बड़े चूहे को घेरे हुए बैठे थे। बूढ़ा चूहा उनको कहानी सुना रहा था। इसी बीच वहाँ पर एक बिल्ली आती दिखी। बिल्ली के डर के मारे सब चूहे बिलों के अन्दर घुस गए। कुछ देर के बाद बूढ़ा चूहा बाहर निकला। उसने इधर-उधर देखा। बिल्ली अब वहाँ नहीं थी। उसने छोटे-छोटे चूहों को दोबारा बुलाया

और उन्हें कहानी सुनानी शुरू कर दी। बीच में से एक नटखट चूहा बोला– ''दादा जी यह बिल्ली भी क्या जालिम चीज है? इसके आने की भनक तक नहीं लगती।''

''हाँ बेटा, यह बिल्ली सचमुच ही बड़ी जालिम चीज है।''

''क्या इसका कोई उपाय नहीं हो सकता है? जिससे इसके आने का पता चल सके।'' एक चूहे ने पूछा।

''मुझे बहुत शर्मिंदगी के साथ कहना पड़ रहा है कि इस समस्या का समाधान करने के लिए हमारे बुजुर्गों ने एक बार एक योजना बनाई थी परन्तु वह सफल नहीं हो सकी।''

''वह कौन-सी योजना थी? क्या हम इसके बारे में जान सकते हैं?'' छोटे चूहे ने पूछा।

''बिल्ली के गले में घंटी बांधने की। घंटी तो तैयार कर ली थी पर बिल्ली के गले में घंटी बांधने कौन जाए? अपनी जान किसे प्यारी नहीं।'' बूढ़े चूहे ने बताया।

सभी चूहे इस बात को सुनकर अपने आपको शर्मिंदा महसूस करने लगे।

''हम इस समस्या का समाधान जरूर ढूंढकर रहेंगे। आप चिंता न करें दादा जी।'' छोटे चूहे ने कहा।

''यह बहुत मुश्किल काम है मेरे बच्चे। इसको कभी भूलकर भी अपने मन में न लाना। समझे।''

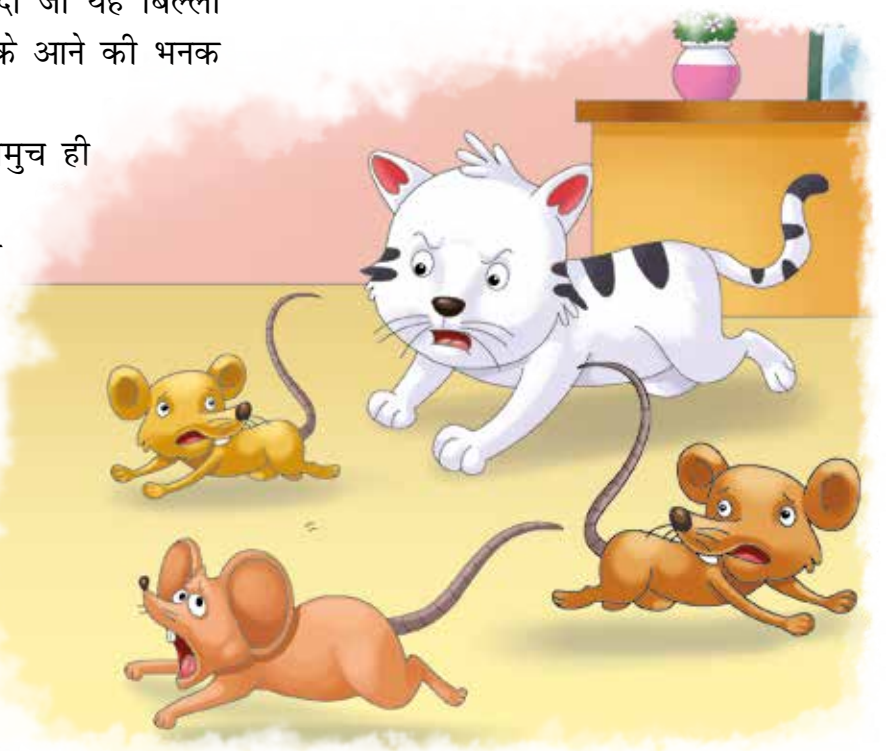

नटखट छोटा चूहा इसी उधेड़बुन में कई दिनों तक पड़ा रहा कि बिल्ली के गले में घंटी कैसे बांधी जाए।

''मैंने तरकीब ढूंढ ली है। तुम लोगों को एक काम करना होगा।'' वह साथियों से बोला।

''क्या?'' उसके साथी चूहे एक साथ बोल पड़े।

''तुम लोगों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि बिल्ली कहाँ-कहाँ जाती है।''

उसके साथी चूहों ने उसके बारे में पूरी जानकारी दे दी। बिल्ली एक घर के अन्दर घुसी। छोटा चूहा जासूस की तरह उसके पीछे लग गया। वह उससे पहले ही रसोईघर के अन्दर घुस गया। उसने देखा कि एक बर्तन में दूध रखा है। उसने झटपट उसमें नींद की गोलियां डाल दी जो उसने एक डॉक्टर की दुकान से चुराई थीं। वह अपना पूरा काम करके एक कोने में दुबक गया। बिल्ली रसोई के अन्दर आई। उसने इधर-उधर देखा कि कोई नहीं है तो फट से बर्तन में रखा दूध पीना शुरू कर दिया। चूहा यह सब देखकर मन ही मन खुश हो रहा था। बिल्ली को दूध पीते-पीते ही नींद आ गई। चूहा दौड़ा-दौड़ा गया अपने साथियों तथा दादा को बुला लाया।

''दादा जी मैं चाहता हूँ कि घंटी बांधने का शुभ कार्य आपके हाथों से हो।'' छोटे चूहे ने बूढ़े चूहे को घंटी थमाते हुए कहा।

''लगता है तुम्हारा दिमाग घूम गया है। जल्दी यहाँ से भाग लो। कहीं ये कमबख्त जाग गई तो सबको एक साथ चट कर जायेगी।''

''ये अब हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। मैंने इसको चक्कर में डाल दिया है।'' छोटा चूहा उसके ऊपर कूदते हुए बोला।

सभी चूहे उसे हैरानी से देख रहे थे।

''मैं कहीं सपना तो नहीं देख रहा हूँ।'' बूढ़े चूहे ने अचम्भे से उसको देखते हुए कहा।?

''दादा जी जल्दी से इसके गले में घंटी बांधो। अब देर मत करो।''

बूढ़े चूहे ने बिल्ली के गले में घंटी बांध दी। छोटे चूहे ने जब उनको बताया कि उसने बिल्ली को कैसे चक्कर में डाला। तो सब उसके दिमाग की दाद देने लगे। बूढ़ा चूहा आज अपने आपमें गर्व महसूस कर रहा था कि जो काम उसके पूर्वज नहीं कर पाए। वह काम आज इस छोटे से चूहे ने कर दिखाया। सभी चूहे खुशी से नाच रहे थे।

प्रेरक-विभूति : राजेन्द्र यादव 'आजाद'

देशभक्त पंजाब केसरी
लाला लाजपत राय

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का बाकी यही निशां होगा।

आज वास्तव में शहीदों का निशां ही बाकी रह गया है। देश की आजादी में शहीद हुए अनगिनत देश-भक्तों में से एक थे पंजाब केसरी लाल लाजपत राय।

लाला जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे एक सच्चे देशभक्त थे और पारिवारिक गरीबी के कारण कड़ी मेहनत कर वकालत की शिक्षा प्राप्त की और लाहौर में वकालत करने लगे।

लाहौर में रहते हुए इनका सम्पर्क आर्यसमाज से हुआ और ये स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित हो देश एवं समाज सेवा में लग गये। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने गरीबों एवं दलितों के उत्थान के लिए लोक सेवक मण्डल की स्थापना की और नि:स्वार्थ भाव से इस दबे हुए शोषित एवं दलित समाज की सेवा की। वहीं दूसरी तरफ बाल गंगाधर तिलक एवं विपिन चन्द्रपाल के साथ अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण आपका दल गर्म दल बन गया और लाल-बाल-पाल के नाम से ब्रिटिश हुकूमत भी कांपने लगी।

आपके विचारों से क्रांतिकारियों को सबल मिला तो अंग्रेज आपके नाम मात्र से ही कांपने लगे। जिसके परिणामस्वरूप फिरंगियों ने आपके विरुद्ध देशद्रोह का आरोप लगाते हुए देश निष्कासन का फरमान जारी कर दिया। इन्हीं दिनों 30 अक्तूबर 1926 को साइमन कमीशन के लाहौर

पहुँचने का समाचार मिला तो देशभर में 'साइमन कमीशन वापस जाओ' के नारे लगाये गये और देश में विद्रोह की आग भड़क उठी। जिसके परिणामस्वरूप कमीशन का विरोध कर रही जनता पर फिरंगी सिपाहियों ने लाठियां बरसानी शुरू कर दीं और अंग्रेज अधिकारी जनरल साण्डर्स ने जुलूस का नेतृत्व कर रहे लाला लाजपत राय पर भी लाठियों का वार कर दिया, जिससे उनकी छाती एवं शरीर के अन्य अंग टूट गये। मगर देशभक्त जनता ने अपने प्रिय नेता के शरीर पर गिरने वाली लाठियों को अपने शरीर पर झेला और उन्हें तत्काल अस्पताल पहुँचाया गया। मगर स्वाभिमानी लाला जी कुछ समय पश्चात ही घायल अवस्था में सभास्थल पर पहुँचे और अपनी बुलन्द आवाज में अंग्रेजों को ललकारा और लाखों की संख्या में इकट्ठे हुए देशभक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि– 'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील होगी।'

इस घटना के कुछ दिनों के पश्चात् ही शरीर पर पड़ी लाठियों की चोट के कारण स्वाभिमानी देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपत राय देश की आजादी के पावन यज्ञ में शहीद हो गये। लाला जी अपना बलिदान देकर सदा के लिए इतिहास के पन्नों में अमर होकर देशवासियों के अन्दर स्वाभिमानी एवं देशभक्ति का अलख जगाकर अपना नाम सुनहरी अक्षरों में लिखकर अमर हो गये।

घर की शान बेटियां

बेटियां परिवार की शान हैं। बेटियों की उचित देखभाल और उन्हें सही अवसर प्रदान किया जाए तो वे क्या नहीं कर सकतीं? शिक्षा के माध्यम से वे अपने व्यक्तित्व को निखार सकती हैं। मानसिक और शारीरिक व नैतिक विकास कर सकती हैं। बिना उचित शिक्षा के व्यक्ति का विकास रूक जाता है। शिक्षा जीवन में सफलता की कुंजी है। जो व्यक्ति को शान और उत्तम कार्य कौशल प्रदान करती है।

इन्दौर (मध्य प्रदेश) में रहने वाली अंकिता नागर की सफलता की कहानी बहुत आकर्षित करती है। उन्होंने जीवन में जिस तरह विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं छोड़ी वह सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

इन्दौर में सब्जी बेचने वाले अशोक नागर की बेटी सिविल जज बन गई हैं। 25 साल की अंकिता नागर ने अपनी सफलता की खुशखबरी सबसे पहले अपनी माँ को दी। माँ लक्ष्मी ठेले पर सब्जी बेच रही थीं। तभी अंकिता रिजल्ट का प्रिंटआउट लेकर माँ के पास पहुँची और बोली– ''मम्मी मैं जज बन गई।'' लक्ष्मी की आँखें खुशी के आंसुओं से भर आईं।

अंकिता नागर ने सिविल जज की परीक्षा में अपने वर्ग में पाँचवां स्थान हासिल किया। साधारण परिवार से ताल्लुक रखने वाली अंकिता के परिवार के सभी सदस्य सब्जी बेचने का काम करते हैं। अंकिता के पापा सुबह 5 बजे उठकर मंडी चले जाते हैं। मम्मी सभी के लिए खाना बनाकर बाद में पापा के सब्जी के ठेले पर चलीं जाती है, फिर दोनों सब्जी बेचते हैं।

अंकिता के रहने का स्थान भी बहुत छोटा और असुविधाजनक है। अंकिता अपने छोटे से कमरे में रोज 8 घंटे पढ़ाई को देती थीं। शाम को जब ठेले पर अधिक भीड़ हो जाती थी तब सब्जी बेचने चली जाती थीं। रात 10 बजे दुकान बंद करके सभी घर आ जाते थे। अंकिता रात 11 बजे फिर से पढ़ाई करने बैठ जातीं।

अंकिता ने तीन साल तक सिविल जज की तैयारी की। उन्होंने 2017 में इन्दौर के वैष्णव कॉलेज से एल.एल.बी. की। इसके बाद 2021 में एल.एल.एम. की परीक्षा पास की। कॉलेज के बाद अंकिता सिविल जज की तैयारी में लगातार जुटी रहीं। दो बार सिलेक्शन नहीं होने के बावजूद माता-पिता उन्हें हौसला दिलाते रहे।

अंकिता युवाओं के साथ अपना अनुभव साझा करते हुए कहती हैं कि रिजल्ट में नम्बर कम-ज्यादा आते रहते हैं लेकिन हौसला हमेशा बुलन्द रखना चाहिए और असफलता मिलने पर नए सिरे से कोशिश करनी चाहिए। हिम्मत वालों को भविष्य में सफलता अवश्य मिलती है।

अंकिता ने मुश्किलों से पढ़ाई की। उनके घर के कमरे बहुत छोटे हैं। गर्मी में छत पर लगी लोहे की चद्दरें इतनी गर्म हो जाती हैं कि पसीने से किताबें तक गीली हो जाती थीं। बारिश में पानी टपकता है। भीष्ण गर्मी देखकर भाई ने अपनी मजदूरी से रुपये बचाकर एक कूलर दिलवाया। अंकिता के परिवार ने अंकिता की पढ़ाई के लिए इतना कुछ किया जिसे बताने के लिए उनके पास शब्द नहीं हैं।

अंकिता के जज बनने की खबर अंकिता के साथ-साथ उनके मोहल्ले वालों के लिए भी शान और खुशी की बात है।

प्रस्तुति : हेमंत नागले

पढ़ो और हँसो

तीन व्यक्तियों को कहीं से तीन बम मिल गये।

एक व्यक्ति बोला– चलो इन्हें पुलिस को दे दें।

दूसरा बोला– हाँ, हाँ ठीक है लेकिन रास्ते में एक फट गया तो?

तीसरा बोला– तो कह देंगे कि दो ही मिले थे।

सुनीता : (सपना से) क्या बताऊँ, मेरा मुन्ना तो हरदम अंगूठा ही चूसता रहता है। कोई उपाय बताओ?

सपना : तुम ऐसा करो। अपने मुन्ने को एक ढीली निक्कर पहना दो। दिनभर वह अपनी निक्कर को ही सम्भालता रहेगा और अंगूठा चूसने की आदत अपने आप छूट जायेगी।

कवि : आपको मेरी कविता पसन्द आई?

प्रवीण : मुझे उसका अन्त सुन्दर लगा।

कवि : किस जगह?

प्रवीण : जब आपने कहा कि कविता समाप्त हुई।

–दीपक राणा (दिल्ली)

एक नौकर ने अपने कंजूस मालिक से कहा– 'साहब' मैंने ख्वाब देखा कि आपने मुझे हजार रुपये एडवांस दिये हैं।

मालिक ने कहा– ठीक है, अगले महीने तुम्हारी तनख्वाह से काट लिए जाएंगे।

पत्नी : अजी, क्या यह सच है कि रुपये-पैसे भी बोलते हैं।

पति : हाँ, कहते तो ऐसा ही हैं।

पत्नी : तो फिर आप दफ्तर जाने से पहले मुझे कुछ पैसे दे जाना, मैं घर में अकेली बैठी बोर होती रहती हूँ।

चूहा : (बिल्ली से) बिल्ली मौसी। आज तुम्हारी मेरे यहाँ दावत है।

बिल्ली मौसी : जरूर-जरूर आऊँगी तुमने बुलाया जो है।

बिल्ली मौसी शाम को आई और चूहे से बोली– म्याऊँ-म्याऊँ।

यह सुनकर चूहा बोला– रूको-रूको जरा मैं छुप जाऊँ।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

सब्जी बेचने वाले के घर पर जब बच्चा हुआ तो एक महिला ने कहा– बधाई हो, बच्चा कैसा है?

–एकदम ताजा है, बहन जी।– सब्जी बेचने वाले ने जवाब दिया।

डॉक्टर : पिछली बार याददाश्त बढ़ाने के लिए जो दवा ले गये थे उससे कुछ फर्क पड़ा।

मरीज : अभी तक कुछ फर्क नहीं पड़ा, रोज दवा लेना ही भूल जाता हूँ।

किरायेदार : (मकान मालिक से) भाई साहब,आपने कैसा मकान मुझे किराये पर दिया है? वहाँ तो चूहे ही दौड़ते रहते हैं।

मकान मालिक : तो क्या इतने कम पैसों में तुम घोड़ों की रेस देखता चाहते हो।

सोनू : (पापा से) पापा, अगर आप को पता चले कि मैं क्लास में फर्स्ट आया हूँ तो आप क्या करोगे?

पापा : अरे बेटा मैं तुझे एक नई साइकिल दिला दूंगा।

सोनू : पापा मैंने आपके पैसे बचा दिये। मैं फेल हो गया हूँ। अब साइकिल लेने की जरूरत नहीं है।

– दीपक कुमार (रेणुकूट, सोनभद्र)

एक ट्रक दूसरे ट्रक को रस्सी से बाँधकर खींच रहा था। राह चलते एक व्यक्ति को हँसी आ गई।

वह कहने लगा– हे भगवान एक रस्सी को ले जाने के लिए दो-दो ट्रक।

– शोभिता गुप्ता (सतना)

एक बार बंटी, संटी और नीटू एक बाइक से जा रहे थे।

तभी ट्रैफिक पुलिस ने हाथ दिया।

नीटू ने कहा : दिख नहीं रहा है, पहले से तीन बैठे हैं, तुम कहाँ बैठोगे?

गृहिणी : (दूध वाले से) सुबह 5 बजे दूध देने आया करो।

दूधवाला : मैडम जल्दी नहीं आ सकता क्योंकि 5 बजे नल में पानी नहीं आता।

शिक्षक : (चमकू से) बस इरादे बुलन्द होने चाहिए, पत्थर से भी पानी निकाला जा सकता है।

चमकू : मैं तो लोहे से भी पानी निकाल सकता हूँ।

शिक्षक : कैसे?

चमकू : हैंडपम्प से।

– अंजलि (दिल्ली)

जानकारीपूर्ण आलेख :
विभा वर्मा

आम
स्वाद ही नहीं सेहत भी सुधारता है

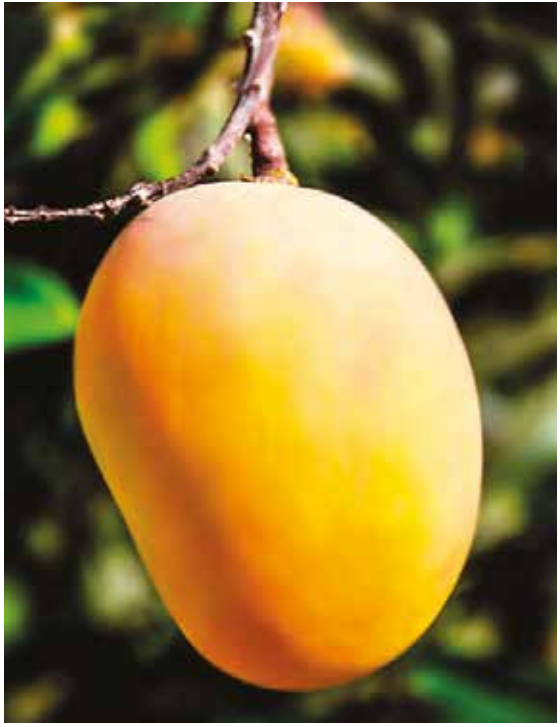

दोस्तो! आम से तुम परिचित तो हो ही। बच्चे, जवान तथा वृद्ध सभी इसके मस्त स्वाद के दीवाने हैं। कष्टकारी गर्मी से जहाँ सभी बेचैन एवं व्यग्र रहते हैं वहीं आम सबकी कष्ट एवं बेचैनी का हरण कर मन को प्रसन्नता एवं उल्लास से भर देता है। इसके नाम से ही हमारे दिलो-दिमाग में मिठास एवं खटास के अनेक सम्मिश्रण के तरह-तरह के स्वाद उभरने लगते हैं एवं हमारी नासिका में आमों की मादक गंध भरकर हमें मदमस्त करने लगती है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि जो कुछ हम खाते हैं वह आठ घंटे में पचकर ही शर्करा बनता है तभी हमारा शरीर इसका उपयोग कर पाता है। पर बच्चो, क्या तुम्हें मालूम है कि यह शर्करा पके आम में स्वाभाविक रूप से रहती है। अत: आम के शरीर में पहुँचते-पहुँचते शरीर इसका उपयोग आरम्भ कर देता है एवं हमें उससे शक्ति आठ घंटे के बजाय तुरन्त ही मिलने लगती है। जिस प्रकार तुम्हारे काम करते रहने या खेलते-कूदते रहने से तुम्हारा शरीर थक जाता है। उसी प्रकार शरीर के अन्दर पाचन शक्ति जो बराबर भारी गरिष्ठ चीजें पचाते-पचाते थक गई होती हैं वे पाचन के भारी काम से छुट्टी पा लेती हैं। जैसे तुम्हें आराम के बाद ताजगी आ जाती है वैसे ही पाचन प्रभावी भी धीरे-धीरे आराम के बाद सशक्त होकर पूर्व शक्ति प्राप्त कर तरोताजा हो उठती है। आधुनिक खोजों से पाया गया कि आम में लोहा, तांबा, फास्फोरस, कैल्शियम, पोटेशियम, मैगनीशियम क्लोराइड आदि खनिजों के अलावा सभी कॉम्प्लेक्स विटामिन तथा विटामिन 'ए' 'डी' 'ई' 'सी' भी बहुतायत से मिलता है। शरीर के लिए आवश्यक एंजाइम तथा अमीनो एसिड भी आम में पाये जाते हैं। सभी फलों से अधिक विटामिन 'ए' आम में ही होता है। यह फल आँखों के लिए वरदान है। एक आदमी को नित्य 5000 अन्तर्राष्ट्रीय इकाई विटामिन 'ए' चाहिए। जो केवल 100 ग्राम आम में ही मिल जाता है। 'रतौंधी' में चूसने वाला आम ज्यादा फायदेमंद होता है। इसमें विटामिन 'सी' भी होता है जो तुम्हारे दांतों को मजबूती प्रदान करता है। यदि तुम्हारा शरीर दुबला-पतला है तो यह आम तुम्हारे लिए किसी टॉनिक से कम नहीं होगा।

दोस्तों, इसकी गुठली भी बहुत गुणकारी होती है। इसीलिए तो कहावत बन गई कि 'आम के आम गुठलियों के भी दाम।'

कविता : डॉ. ओम पंकज

वतन
हमारी जान है

वतन हमारी जान है, वतन के लाल हम।
वतन हमारी शान है, वतन के बाल हम।

बहकावे में किसी के, हम नहीं आने वाले।
कोई परखे चाहे जैसे, हैं वतन की चाल हम।

प्रहरी हम सीमाओं के, चौकस नज़र रखते।
लड़ने को हैं तैयार, भिड़ने को काल हम।

वैसे अमन के रास्ते, पर चलने वाले हैं।
लेकिन दुश्मन के लिए, हैं साहस की ढाल हम।

लहरायेंगे तिरंगा ऊपर उछालकर।
साहस और देशभक्ति की मिसाल हम।

बाल कविता : राजेश निषाद

अपनी है धरती

अपनी है धरती, अपने सब लोग।
रहते धरती पर, साढ़े सात अरब लोग।

रंग नस्ल अलग-अलग, है भाषा बोली।
रंग-बिरंगे लोग जैसे, सजी हो रंगोली।

कहीं है आबादी घनी, कहीं कम लोग।
कहीं तेज धूप कहीं, शीत का प्रकोप।

बाल वृद्ध युवा और, छोटे-बड़े लोग।
नारी शक्ति आधी, बाकी हैं सारे लोग।

धरती है सांझी सबकी, प्यारे-प्यारे लोग।
प्रेम से रहें यहां, प्रेम भरे लोग।

मई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **निशिका मनवाणी** — 12 वर्ष
   44, ग्रीन पॉर्क सोसाइटी,
   अंकलेश्वर महादेव रोड, गोधरा (गुजरात)

2. **हिमांशु पाण्डेय** — 13 वर्ष
   गाँव : छोटका मिर्जापुर,
   निकट शीला राइस मिल,
   जिला : अम्बेडकर नगर (उ.प्र.)

3. **वंशिका देवी** — 12 वर्ष
   सन्त निरंकारी सत्संग भवन,
   भुज (गुजरात)

4. **लक्ष** — 10 वर्ष
   गीता कॉटेज-2, भुज (गुजरात)

5. **शिवम कुमार** — 10 वर्ष
   सन्त निरंकारी सत्संग भवन,
   भुज (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

उन्नति अरोड़ा (भुज)
आलिया प्रवीण (उरैन, लखीसराय),
रिद्धि सैनी (राज नगर, नई दिल्ली),
कर्ण (निमवाड़ी कैम्प, अकोला),
स्वास्तिका (पवन नगर, सिडको नासिक),
कृष्णा (अजमेर),
हिमांशु सिंह (सरैया, देवरिया),
आनन्दित (सेक्टर-39, लुधियाना),
हर्षिता (जलालाबाद, फाजिल्का),
मानव (अवतार एंक्लेव, दिल्ली),
खुशी (अशोक विहार कालोनी, नकोदर),
पूनम (जनरल गंज, कानपुर),
गर्विता (विकास नगर, भिवानी),
रोशनी, अंशिका, लहर, चांदनी, जय, आर्या,
कबीर, पीयूष, यश, परी, दक्ष, मंथन,
यशिका, कृष्णा (गोधरा)

अगस्त अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 सितम्बर** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **नवम्बर अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। अप्रैल अंक में प्रकाशित कहानी 'बदला और बलिदान' पसन्द आई। चित्रकथा एवं किट्टी बच्चे खुश हो जाते हैं तथा बच्चों को ज्ञान प्राप्त होता है। 'पढ़ो और हँसो' भी गुदगुदी पैदा करते हैं।

– पूर्णसिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मई माह की पत्रिका प्राप्त हुई। इसमें प्रकाशित प्रेरक-प्रसंग 'माँ क्या सोचेगी?' और 'निडर बालक मल्हारी' प्रेरणादायक संजीव प्रेरक-प्रसंग हैं।

इसके सभी प्रेरक-प्रसंग प्रेरक एवं शिक्षाप्रद हैं।

यह पत्रिका बच्चों के लिए शिक्षाप्रद एवं अनमोल तोहफा है।

– सौरभ कुमार (माधौगंज, हरदोई)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। यह हर माह समय पर ही आती है तथा सुसंस्कृत और साफ-सुथरी पत्रिका का दूसरा नाम है हँसती दुनिया।

मुझे इसकी कविताएं अच्छी लगती हैं। इसमें मुझे चित्रकथा तथा किट्टी की कहानियां भी बहुत पसन्द हैं। मैं 'पढ़ो और हँसो' को बहुत पसन्द करता हूँ। इसमें से याद कर अपने दोस्तों को सुनाकर हँसाता और हँसता हूँ।

– दीपांशु भारद्वाज (गाँधी नगर)

मैं हँसती दुनिया का नियमित सदस्य हूँ। मुझे हँसती दुनिया के हर अंक की कहानियां एवं कविताएं अच्छी लगती हैं।

इसकी कहानियां शिक्षाप्रद होती हैं जो हमें ज्ञान देती हैं।

यह पत्रिका हम सबको अच्छे गुणों तथा संस्कारों को प्राप्त करने की प्रेरणा देती है।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिन-दुगूनी रात चौगुनी तरक्की करे।

– गणेश राय (राजा बाजार, दिल्ली)

हमें हँसती दुनिया पढ़ना बहुत पसन्द है। हम काफी समय से यह पत्रिका पढ़ रहे हैं। हँसती दुनिया हम सभी को एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

इसकी सामग्री शिक्षाप्रद, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक होती है। यह पत्रिका बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए भी उपयोगी है। हमने यह पत्रिका कई बच्चों को भेंट की है। उनको भी यह बहुत पसन्द आई।

इसमें प्रकाशित 'अनमोल वचन' और 'कभी न भूलो' हमारे मन में एक सकारात्मक सोच भर देते हैं। 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' की व्याख्या हमारे अध्यात्म को और मजबूती प्रदान करती है।

– विश्वनाथ (भिवंडी)

हँसती दुनिया में प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री शिक्षाप्रद होती है। यह बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी प्रभावित किये बिना नहीं रहती।

इस पत्रिका की हर एक कहानी जहाँ बच्चों का मार्गदर्शन करती है, वहीं बड़ों को भी प्रेरणा देती है।

मैं प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि यह बच्चों का भविष्य में भी इसी तरह मार्गदर्शन करती रहे।

– विक्रम सिंह पाल

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सत्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सत्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें : -

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सत्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।